नित्य नियम पाठ विधि



श्री मस्तबब आश्रम (रजि०)

पटोली मंगोत्रियां, जम्मू-180 007

फोन : जम्मू 547968

हरिद्वार 461118

485308

मुद्रक :-

ज्योति प्रिन्टर्ज़ पटोली, जम्मू-7

फोन : 572617

शान्ति पाठ

ॐ शं मो मित्रः। शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा।
शं नो इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरूक्रमः।
नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि
तन्मामावेत्, तद्वक्तारमावेत्, आवेत् माम्,
आवेत् वक्तारम्।

(ऋग्वेद का मन्त्र)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

विषय सूची

क्रम सं॰		विषय (पाठ/भजन)	पृष्ठ सं॰
1.	नित्य नियम पाठ आरम्भ	(शुक्लाम्बरधरम्)	1
2.	गणेश स्तुति	(हेमज़ा सुतम्)	5
3.	गुरु स्तुति	(अज्ञान घटे)	7
4.	विषणु स्तुति	(जय नारायण)	12
5.	गौरी स्तुति	(लीलारब्ध)	15
6.	शंकर स्तुति	(आधीनामगधं दिव्यम्)	19
7.	शिव महिम्ना स्तोत्रम्	(महिम्न: पारंते)	21
8.	शिव स्तुति	(नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय)	33
9.	भैरव स्तुति	(व्याप्तचराचर)	35
10.	शंकर स्तुति	(अतिभीषण)	39
11.	पंचस्तवि: (कुछ श्लोक)	(व्यांकुलतायि मंज़)	41
12.	गुरुस्तुति	(शिव शंकर भव भय हर)	51

13.	भवानीनामसहस्त्र	(ॐ अरि शंख-कृपाल-खेट वाणान्)	64
14.	इन्द्राक्षी स्तोत्रम्	(इन्द्राक्षी नाम सा देवी)	96
15.	शारिका स्तुति	(बीजैः सप्तभिरूज्ज्वला)	104
16.	नित्य नियम पाठ समाप्तम्	(कर्पूरगौरं करुणावतारं)	106
17.	भजन	(अब सौंप दिया इस जीवन)	108
18.	आरती गणेश जी की	(जय गणेश जय गणेश)	112
19.	शिवजी की आरती	(ॐ जय शिव ओंकारा)	113
20.	भजन जय संतोषी मां	(मैं तो आरती उतारूं रे)	114
21.	कुछ स्मृणीय श्लोक		116
22.	श्रीराज राजेश्वरी स्तुति		129

प्रथम संस्करण-1000 प्रतियां जनवरी, 1993

दूसरा संस्करण-1000 प्रतियां नवम्बर, 1993

तीसरा संस्करण-1000 प्रतियां जुलाई, 1995

चौथा संस्करण-1200 प्रतियां मई 1998

पांचवा संस्करण-दिसम्बर 2001

ॐ श्री गणेशाय नमः

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुज़म्
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नो पशान्तये।
अभिप्रीतार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितो यः सूरैर-अपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः।

विभ्रद्दक्षिण हस्त पद्म युगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे
वामे मोदक पूर्णपात्र परषु नागोपवीती त्रिदृक्।
श्रीमान् सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शङ्खौ वहन्मौलिमान्।
दिश्यात् ईश्वर पुत्र ईश भगवान लम्बोदरः शर्म नः॥

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्त धराय च
नमः ईश्वर पुत्राय श्री गणेशाय नमो नमः॥

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरुः साक्षात्महेश्वरः
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

आपदा मपहर्तारं दातारं सर्व संपदाम्
लोकाभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहं।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामलं गुरोः पदम्
शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

नमामि सत्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणं
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थ सिद्धये।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वन्द्वा तीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्या दिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमल मचलं सर्वधीसा क्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्‌गुरूं तं नमामि॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन सदृशयं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी कान्तं कमल नयनं योगिभिर्ध्यान गम्यम्
वन्दे विष्णुं भव भयहरं सर्वलोकै कनाथम्॥

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेंदैः साङ्गपद क्रमोपनिषदैः गायन्ति यं सामगाः।
ध्याना वस्थित-तद्‌गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः।

वन्दे दैवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत् कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्य शशाङ्कवह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजना श्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गेवहन्तम्
नागं पाशं च घन्टा डमरूकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालङ्कारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥

गणेश स्तुति

हेमजा सुतं भजे गणेशं ईशनन्दनम्।
एक दन्त वक्र-तुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम्।
रक्त गात्र धूम्रनेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्।
कल्पवृक्ष भक्त रक्ष नमोस्तुते गजाननम्।१।

पाशिपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणम्।
अग्निकोटि सूर्यज्योति वज्रकोटि पर्वतम्
चित्रमाल भक्तिजाल भालचन्द्र शोभितम्।२।
कल्पवृक्ष..........

भूत भव्य हव्य कव्य भृगु भार्गवन्दितम्।
देव वह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम्।
पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्।३।
कल्पवृक्ष ....

विश्ववीर्य विश्व सूर्य विश्वकर्म निर्मलम्।
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूज़ितम।
चतुर्मुखं चतुर्भुज़ं सेवितं चतुर्युगम्।४।

कल्पवृक्ष..........

ऋध्दि बुध्दि अष्टसिध्दि नवनिधान दायकम्।
यज्ञ कर्म सर्व धर्म सर्व वर्ण अर्चितम्।
पूत घूत दुष्ट मुष्ट दान्वै सर्दार्चितम्।५।

कल्पवृक्ष..........

हर्ष रूप वर्ष रूप पुरुष रूप वन्दितम्।
शोर्प कर्ण रक्त वर्ण रक्त चंदन लेपितम्।
योग इष्ट योग सृष्ट योग दृष्टि दायकम्।६।

कल्पवृक्ष..........

गुरु स्तुति

स्व0 श्री योगीराज नन्दलाल जी के

पद्म कमलों में

स्व0 श्री नीलकन्ठ जी की तुच्छ भेंट

अज्ञान घटे सिर्यि प्रकाश छुक आसवोनुय
ज्ञान प्रकाश छुक आसवोनुय
ॐ श्री सत्गुरु क्षण क्षण छुम आसर चोनुय

ॐ श्री सत्गुरु..........

चय छुक ब्रह्मा चय हा विष्णु महेश्वरै
चय विश्वमय छुक अज़र अमर अक्षर थ्यरय
वर त्रण गुणन पादि प्रणाम भविनय म्योनुय
ॐ श्री सतगुरु क्षण क्षण छुम आसर चोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

चान्यन पादन हन्दि गरदे हुन्दुय अंजन
युस लागि न्यतरन देव द्रष्टि तमिस छि बनन्
यथ न कांह वुछान तथ सदा चय छुक वुछवोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

दया सागर! कर दया म्य दीनस क्षीनस
सिद्धी दितम मदमोचन म्य बुद्धि हीनस
ब अद कस वन ऑरत्य नाद छुक बोज़वोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

शरण ब आसय चय्ध प्यासय परण पादन
वरुम म्य दासस थावतम कन आॅरत्यन नादन
तरन भवसर च्योन प्रभाव इमव ज़ोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

छुक सिद्ध योगी ब छुस रूगी दिम म्य दवा
औषध चान्यन पादन हंज़ गरद छ ना
उत्तम चूरण सर्व रूगन छु कासवोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

घटे घाशर! चानि दयायि म्य रूग हटे
मटे छुसय तार भवसर अके वोटे
लटे अके मोख म्य हावतम प्रज़लवोनुय (५)

ॐ श्री सतगुरु..........

सन्ताप अगन पाप सूत्यन गोमुत प्रबल
शेरस प्यठ थाव कर कमल पनन्य शीतल
संताप च़ल्यम पाप गल्यम नोव तय प्रोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

सेतार मनुक तार चॉरिथ सदा दिवान
हद यथ ना कुने बोद्ध म्याज सुय स्तुता ग्यवान
वृच म्यानि नच़ान कनव बोज़तम लोल वनवोनुय

ॐ श्री सतगुरु..........

करतम स दया वरतम तल च़रनार बिन्दन
छुक बोध द्रष्टि च़य दिवान अन्द्यन त मन्द्यन
अन्दान छुय न्याय चानि दयायि कर पाय म्योनुय

चिन्तामनि! सोन च़ बनावान छुक त्रामस
फ़ोतस मोखतय पोखत बनावान छुक खामस
च़य घटि हुन्द गाश स्वामी नन्द लाल छुय नाव चोनुय

ॐ श्री सत्गुरु..........

ई-ब-न ओसुस तीय ओसुस ज़ानान ब पान
दयायि चानि यीय ब-छुस तीय म्य ज़ोनुम टकान
रोवमुत लोबुम पज़ि लबित नज़ि रावरोनुय

ॐ श्री सत्गुरु..........

इमन इमन गव ज़ि यिमन च़य सूत्य लयस
दयस सूत्यन गयि ज़ि मीलिथ वाति पययस
भयस ज़य गोम दोन म्य रूदुम कुनुय भासवोनुय

ॐ श्री सत्गुरु..........

भवसर तरनुक 'नीलकंठस' बनितन उपाय
स्वामी नन्दलाल जी तय स्वामी लालजी
रूज़्यतन सहाय
छीय तंग आमत्य अंज़ल ह्यथ मंगवोनिय

ॐ श्री सत्गुरु..........

●●

विष्णु स्तुति

ॐ जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेश विनाशिन् पतितोहं संसारे॥
घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषा भारम्।
माम अनुकम्पय दीनम् अनाथं कुरु भवसागर पारम्॥

जय जय देव जया सुर सूदन जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख कमल मधुव्रत जय दशकन्धर जिष्णो॥

घोरं० ....

यद्यपि सकलम् अहं कलयामि हरे नहि किमऽपि स सत्वम्।
तदऽपि न मुञ्चति माम-इदम् अच्युत पुत्र कलत्र ममत्त्वम्॥

घोरं० ....

पुनर् अपि जननं पुनर् अपि मरणं पुनर् अपि गर्भनिवासम्।
सोढुम अलं पुनर् अस्मिन्माधव मामुद्धर निजदासम्॥

घोरं० ....

त्वं जननी जनकः प्रभुर् अच्युत त्वं सुहृत् कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा गतवत्सल त्वं भव जलधि वहित्रम्॥

घोरं० ....

जनक सुतापति चरण परायण शंकर मुनिवर गीतम्।
धारय मनसि कृष्ण पूरुषोत्तम वारय संसृति भीतिम्॥

घोरं॰ ....

-●-

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिभ्
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे।
सूरजं शैशवं सत्यभा माधवं श्रीधरं श्रीपतिं राधिका राधितम्
इन्दिरा मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे।
अगंनाम् अगंनाम् अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरे
णांगना।

सत्यभा कल्पिते मण्डले मध्यगः सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः।
बालिका बालिका बाललीला लयः संग सन्दर्शित भ्रू लता
विभ्रमः।

गोपिका गीत दत्ता वदानः स्वयं संजगौ वेणुना देवकी नन्दनः।
जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं जयतु जयतु कृष्णो
वृष्णिवंश प्रदीपः।
जयतु जयतु मेघ श्यामलः कोमलांगो जयतु जयतु पृथ्वी।
भारनाशो मुकुन्दः।

●●

गौरी स्तुति

लीला रब्ध स्थापित लुप्ताखिल लोकां।
लोका तीतै-र्योगिभिर् अन्तर् हृदि मृग्याम्।
बाला दित्य श्रेणि समान द्युति पुजां
गौरीम् अबाम् अम्बु-रुहा-क्षीम् अह्म-ई-डये।

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानां
पादाम्भोज ध्यान पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीं ईशाङ् गार्ध हरां तां तनु मध्याम्।

गौरीम०............

प्रत्या हार ध्यान समाधि स्थिति भाजां
नित्यं चित्ते निर्वृत्ति काष्ठां कलयन्तीम्।
सत्य ज्ञाना नन्दमयीं तां तड़ित आभाम्।

गौरीम०............

चन्द्रा पीडा नन्दित मन्द स्मित वक्त्रां
चन्द्रा पीडा लङ्कतृ लोला लकभाराम्।
इन्द्रो पेन्द्रा द्यर्चित पादाम्बुज युग्माम्।

गौरीम०............

नाना कारैः शक्ति कदम्बै-र्भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कल्याणीं तां कल्पल ताम आनति भाजाम्।
गौरीम०..........

मूला धारात उत्त्थित वन्तीं विधि रन्ध्रं
सौरं चन्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतराम् तां अभिवन्द्याम्।
गौरीम०..........

आदि क्षान्ताम् अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूत कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द ब्रह्मा नन्दमयीं तां अभिरामां।
गौरीम०..........

यस्या कुक्षौ लीनम् अखण्डं जगत अण्डं
भूयो भूयः प्रादुर अभूत् अक्षतम् एव।
भर्तृा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीम्।

गौरीम०..........

यस्याम् एतत्प्रोतम् अशेषं मणि माला
सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
तां अद्यात्म ज्ञान पदव्या गमनीयाम्।

गौरीम०..........

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्ग विधौ सहंरणे च।
विश्व त्राण क्रीडन शीलां शिव पत्नीम्।

गौरीम०..........

प्रातः काले भाव विशुद्धिंः विदधानो
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरी दशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पतिम्-उच्चैः शिव भक्तिं
तस्या वश्यं पर्वत पुत्री विदधाति
गौरीम०..........

इति गौरी स्तुतिः

आधीनाम अगदं दिव्यं व्याधीनां मूल कृन्तनम्
उपद्र वाणां दलनं महादेवम उपास्महे।

अधियन हुन्द युस औशधि छु आसवुन, व्याधियन हुन्द युस मूल गालान
कठिञण उपद्रवन द्रोत युस छु वायान्, तस महादेवस कर् भ पूज़ा।

अहं पापी पाप क्षपण निपुणः शंकर भवान्
अहं भीतो भीता भय वितरणे ते व्यसनिता
अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जस्तमितरत्
न जानेहं वक्तुं कुरु सकल शौचे मयि कृपाम्

ही शंकर छुस भ पापी आसवुन, च़य पापन छुख नाश करान।
खूच़मुत छुस भ ब्यियि खोफ छुम म्य बासान, चय अभ्य दिवान चय भय कासान।
छुस भ दीन ब्यियि आ'रत्यन हुन्द आरुत, आ'रत्यन भवसर च़य तारान।
कर दया म्य बुद्धि हीनस प्यठ च़ पानय, अमि ख़ोत ज़्याद छुस न केंह भ ज़ानान।

जनस्त्वद् पादाब्ज़ श्रवण मनन ध्यान निपुणाः
स्वयं ते विस्तीर्णा न खलु कुरणा तेषु करुणा।
भवे लीने दीने मयि मननहीने न करुणा
कथं नाथ ख्यात स्त्वमसि करुणा सागर इति।

हों शंकर चानि चरण कमलुक युस, करि श्रवन मनन ब्यियि निदिध्यासन

तरि पानै सु भवसर्, हाजत तस, चाञन कटाक्षण हुन्द कति रोज़न।

संसारस मंज़ फटिमतिस म्य दुखियस, बिचा़र् रु'स्तिस त् म्य अनाथस

यलि करख न दया म्य मूढ़ भाव् स'स्तिस, नाव चोन दयासागर वन् ब् कस।

कति सपदि नाव चोन मशहूर ज़गतस, शंकर तारान छु भवसागरस॥

शिव महिम्नस्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

ॐ महिम्नः पारन्ते परम अविदुषो यद्य सदृशी–

स्तुति ब्रह्मा दीनाम अपि तदवसन्ना स्त्वयि गिरः।

अथा वाच्यः सर्वः स्वमति परिणामा वधि गृणन

ममाप्येष स्तोत्रे हर निर पवादः परिकरः।१।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मम नसयोर-
तद्व्या वृत्या यं चकितम भिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कति विधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वा चीने पतति न मनः कस्य न वचः ।२।

मधुस्फीता वाचः परमम मृतं निर्मित वत-
स्तव ब्रह्मन्किं वाग अपि सुरगुरोर्विस्मय पदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः
पुना मीत्यर्थे अस्मिन्पुर मथन! बुद्धिर्व्यं वसिता ।३।

तवै श्रवर्य्यं यत्त ज्जगदु दय रक्षा प्रलय कृत्
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण भिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम अस्मिन्वरद रमणीया मरमणीम्
विहन्तं व्या क्रोशीं विदधत इहैके जड धियः ।४।

किमीहः किंकायः स खलु किमु पायस्त्रि भुवनम्
किमा धारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्कैंश्वर्य्ये त्वय्य नवसर दुःस्थो हत धियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखर यति मोहाय जगताम्।५।

अजन्मानो लोकाः किम् अवयववन्तो अपि जगताम्
अधिष्ठा तारं किं भव विधिर नादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवन जनने कः परिं करो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्य मरवर! संशेरत इमे।६।

त्रयी सांख्यं योगः पशु पतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमि दमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचि त्र्यादृ जुकुटिल नाना पथ जुषाम्
नृणामेको गम्य स्त्वमसि पयसामर्णव इव।७।

महोक्षः खट्वाङ्गं परशु रजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीय त्तव वरद! तन्त्रोप करणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद् भ्रू प्रणि हितां
नहि स्वात्मा रामं विषय मृग तृष्णा भ्रमयति।८।

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलम परस्त्व ध्रुवमिदम्
परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्ते अप्ये तस्मिन्पुर मथन! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जजहेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।९।

तवेश्वर्य्यं यत्नाद् यदुपरि विरञ्चिर्हरि रधः
परि च्छेत्तुं याता वन लमनलस्कन्द वपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धा भरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनु वृत्तिर्नफलति।१०।

अयत्नादा साद्य त्रिभु वनम वैरव्यतिकरम्
दशास्यो अद्धा हून भृत रणकण्डू परवशान्।
शिरः पद्म श्रेणी रचित चरणाम्भोरुह बलेः
स्थिरा यास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुरहर! विस्फूर्जितमिदम्।११।

अमुष्य त्वत्सेवा समधि गतसारं भुजवनम्
बलात्कैलासे अपि त्वद धिवसतौ विक्र मयतः
अलभ्या पाताले अप्यल सचलितां गुष्ट शिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्या सीद्ध्रु वमुपचितो मुह्यति खलः।१२।

यदृद्धि सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे वाणः परिजन विधेय त्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरि वसितरि त्वच्चारण योर्न
कस्या प्युन्नत्यै भवति शिरस स्त्वय्य वनतिः।१३।

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षय चकित देवासुर कृपा-
विधेयस्या असीद्य स्त्रिनयन! विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रिय महो
विका रोपि श्लाध्यो भुवन भय भङ्ग व्यसनिनः।१४।

असिद्धार्था नैव क्वचि दपि संदेवा सुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितर सुरसा धारणम भूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।१५।

मही पादा घाताद् व्रजति सहसा संशय पदम्
पदं विष्णोर्भ्राम्यद भुज परिघरुग्ण ग्रहगणम्
मुहुर्द्यौ दौंस्थ्यं यात्यनि भृत जटाताडित तटा
जगद् श्वायै त्वं नटसि नन वामैव विभुता।१६।

वियद्द् व्यापी तारा गणगुणित फेनाद् गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतल घुदृष्टः शिरसि ते।
जगत् द्वीपाकारं जलधि वलयं तेन कृतमि-
त्यनेनै वोन्नेयं धृत महिम! दिव्यं तव वपुः।१७।

रथः क्षोणी यन्ता शत धृतिर गेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्राकौं रथ चरण पाणिः शर इति।
दिध क्षोस्ते कोयं त्रिपुर तृण माडम्बर विधि-
विर्धेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।१८।

हरिस्ते साहस्त्रं कमल बलि माधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निज मुद हरन्नेत्र कलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिण तिमसौ चक्र वपुषा
त्रनाणां रक्षायै त्रिपुर हर जागर्ति जगताम्।१९।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वम् असि फल योगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषा राधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फल दान प्रति भुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ परि करः कर्म सुजनः।२०।

क्रिया दक्षो दक्षः क्रतु पति रघी शस्तनु भृता-
मृषी णामार्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुर गणाः।
कृतुभ्रं शस्त्वत्तः क्रतुफल विधान व्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरम भिचाराय हि मखाः।२१।

प्रजा नाथं नाथ! प्रसभम भिकं स्वां दुहितरम्
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवम अपि सपत्रा कृतमम्
त्रसन्तंते अद्यापि त्यजति न मगव्या धरभसः।२२।

अपूर्व लावण्यं विवसन तनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सको अपव्यतिकरः।
यतो भग्ने गृह्ये सकृद अपि सपर्या बिद धतां
ध्रुवुवं मोक्षो श्लीलं किमपि पुरुषार्थं प्रसविते।२३।

स्वला वण्याशंसा धृत धनुषमन्हाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरम थन! पुष्पायुधमऽपि।
यदि स्त्रैणं देवी यम निरत देहार्घ घटना-
दवैति त्वाम द्धावत वरद! मुग्धा युवतयः।२४।

श्मशानेष्वा कृीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचरा-
श्चिता भस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम खिलम्
तथा अपि स्मर्तृणां वरद! परमं मङ्गलमसि।२५।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधम विधायात्त मरुतः
प्रहृष्य द्रोमाणः प्रमद सलिलोत्सङ्गित दृशः।
यदालोक्याह् लादं ह्रद इव निम ज्जयामृत मये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्।२६।

त्वमर्कस्तवं सोमस्त्वमसि पवन स्त्वं हुत वहः
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणि रात्मा त्वमितिच
परि च्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरम्
न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।२७।

त्रयीं तिस्त्रो वृत्ती स्त्रि भुवन मथो त्रीनपि सुरा-
नकारा द्यैर्वर्णैं स्त्रिभिर भिद धत्तीर्ण विकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनि भिर वरुन्धा नमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्यो मितिपदम्।२८।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-
स्तथाभीमेशा नाविति यद भिधान अष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रवि चरति देव श्रुतिरपि
प्रिया यास्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योस्मि भवते।२९।

वपुष्प्रादुर्भा वादनुमितमिद जन्मनि पुरा
पुरारे! नैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनु रहम ग्रेप्यनतिमान्
महेश! क्षन्तव्यं तदिदम परा धद्वयमपि।३०॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर! महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मैते तदिदमिति सर्वाय च नमः।३१।

बहुल रजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल तमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुख कृते सत्त्वो द्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रै गुण्ये शिवाय नमो नमः।३२।

श्री पृष्प दन्त मुखपङ्कज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर पादयोः।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिः॥

शिव स्तुति

नागेन्द्र हाराय त्रि-लोचनाय, भस्माङ्ग-रागाय महेश्वराय।
देवाधि-देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥

मातङ्ग चरमाम्बर भूषणाय, समस्त गीर्वाण गणार्चिताय।
त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥

शिवा मुखाम्भोज विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय।
चन्द्रार्क वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥

वशिष्ठ-कुम्भोत्भव-गौतमादि, मुनीन्द्र-वन्द्याय गिरीश्वराय।
श्री नील कण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥

यज्ञ स्वरूपाय जटा धराय, पिनाक हस्ताय सनातनाय।
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥

ॐ कारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः,
कामद मोक्षदं चैव ओंकारा तं नमाम्यहम।

न जातो न मृतो यश्च क्षयो यस्य न विद्यते,
नमन्ति देवताः सर्वे नकारं त० ....

महादेवं महावक्रं महाध्यान परायणम्,
महा पापहरं देवं मकारं त० ....

शिवात्पर तरो नास्ति शिव शास्त्रेषु निश्चयः,
शमन्ति सर्व पापानि शिकारं त० ....

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठ भूषणम्,
वामे शक्तिधरं देवं वकारं त० ....

यत्र तत्र स्थितो देवः सर्व व्यापी महेश्वर,
यो गुरु सर्व देवानां यकारं त० ....

ॐ कारं कर्म चक्रेषु नकारं नाभि मण्डले,
मकारं हृदये देशे शकारं कण्ठ भूषणम्।
वकारं वक्रमध्ये तु यकारं ब्रह्मरन्ध्रगम,
एवं षडक्षरस्तोत्रं यः पठेच्छिव सन्निधौ।
शिव लोकम वाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

भैरव स्तुति

व्याप्त चराचर भाव विशेषम्
चिन्मय मेकं अनन्तं अनादिम्।
भैरव नाथं अनाथ शरण्यम्
तन्मय चित्ततया हृदि वंदे॥

त्वन्मयमे तदऽशेषं इदानीं

भाति मम त्वद् अनुग्रह शक्त्या।

त्वं च महेश ! सदैव ममात्मा

स्वात्म मयं मम तेन समस्तम्॥

स्वात्मनि विश्गते त्वयि नाथे

तेन न संसृतिभीतिः कथाऽतस्ति।

सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह

त्रास विधा यिषु कर्म गणेषु॥

अन्तक! मां प्रति मा दृशमेनां

क्रोध करालतमां विदधीहि।

शंकर सेवन चिन्तन धीरो

भीषण भैरव शक्ति मयोऽस्मि॥

इत्थमुपोद भवन्मय संविद्-
दीधित दारित भूरित मिस्त्रः।
मृत्यु यमान्तक कर्म पिशाचै-
नाऽथ नमोस्तु न जातु बिभेमि॥
प्रोदित सत्य विबोद मरीचि
प्रोक्षित विश्व पदार्थ सत्तत्वः।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे
त्वय्यऽहमात्मनि निर्वृतिमेमि॥
मानस गोचरमेति यदैव
क्लेश दशाऽतनु तापविधात्री।
नाथ! तदैव मम त्वदभेद-
स्तोत्र पराऽमृतवृष्टिर उदेति॥

शंकर ! सत्यमिदं व्रतदान-

स्नान तपो भवता पविनाशी।

तावक शास्त्र परामृत चिन्ता

स्यन्दति चेतसि निर्वृति धाराः॥

नृत्यति गायति हृषयति गाढं

संवि दियं मम भैरवनाथ।

त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकम्

दुर्लभ मन्यजनैः समयज्ञम्॥

वसुर सपौषै कृष्णा दशम्या-

मभिनवगुप्तः स्तवमि मम करोत्।

येन विभुर्भव मरुसन्तापम्

शमयति झटिति जनस्य दयालुः॥

शंकर स्तुति

अति भीषण कटु भाषण यमकिङ्कर पटली
कृत ताडन परि पीडन मरणागम समये।
उमया सह मम चेतसि यम शासन निवसन्
शिव शंकर शिवजी शंकर हरमे हर दुरितम्।१।
अति दुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु संचय दलिते
पवि कर्कश कटु जल्पित खल गर्हण चलिते।
शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन्।२।
शिव शंकर ....
भव भञ्जन सुर रञ्जन खल वञ्चन पुरहन्
दनु जान्तक मदनान्तक रति जान्तक भगवन्।

गिरि जावर करुणा कर परमेश्वर भयहन्।३।

शिव शंकर ....

शक्र शासन कृत शासन चतुराश्रम विषय

कलि विग्रह भव दुर्ग्रह रिपु दुर्बल समये।

द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दर कम्पित हृदये।४।

शिव शंकर ....

भव सम्भव विविधामय परिपीडित वपुषम्

दयि तात्मज ममता भर कलुषी कृत हृदयम्।

कुरु मां निज चरणार्चन निरतं भव सततम्।५।

शिव शंकर ....

आय शरण च़य पादन विनय किञ नमिथय

व्याकुल तायि मंज माता रछतम च़य
व्याकुल तायि मंज़ बजि आपदायि मंज़
गृह पीडायि मंज़ माता रछतम च़य।

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्त्र रश्मि-
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै।
वागीश्वरी ! त्रिभुवनेश्वरी ! विश्वमातः
अन्तर्बहिश्च कृतसंस्थितये नमस्ते।

(पं० २-३१)

सरस्वती त्रिपोर सो'न्दरी ज़गतमाता, भवानीश्वरी छक आसवञ्य चय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य चन्द्रम कुमार, विष्णु गणेश छुय पूज़ान चे़य
अन्दर न्यबर वा'तिथ त्रिभुवनस सा'रिसय,
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम आ'सिनय चे़य। (आय०)

यस्या प्रभावम तुलं भगवान नन्तो

ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च

सा चण्डिकाखिल जगत्परि पालनाय

याशाय चाशुभ भयस्य मतिं करोतु।

(दु० सप्त०)

यमिसुन्द प्रभाव छुय हद् रो'स्त आसवुन, भगवान् त शेषनाग छिन वनिथ ह्यकान ब्रह्मा त शंकर तिम ति छिय हा'रिथ, चानि शक्तिय हंज़ महिमा न ज़ानान सो'य चण्डी दीवी र'छतन म्य, यो'स सा'रिस्य ज़गतस छंय पालान दीतन म्य तिछ़ बो'द्ध यिहय ज़गतमाता, यमि सा'त्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान

(आय०)

देवि ! त्र्यम्बक पत्नि ! पार्वति ! सति ! त्रैलोक्य मातः !

शिवे!

शर्वाणि ! त्रिपुरे ! मृडानि ! वरदे ! रुद्राणि!

कात्यायिनि ! भीमे ! भैरवि ! चण्डि ! शर्वरि ! कले

कालक्षय ! शूलिनि !
त्वत्पाद प्रणतान अनन्यमनसः पर्या कुलान्पाहि नः॥

(पं॰ १-३)

ही दीवी छक च़ त्र्यम्बक् पत्नी, च़यय वनान सती च़य पार्वती
त्रैलोकी हन्ज़ छक माता भगवती, च़य वर दिवान छक च़ मृडानी
च़य त्रिपोर सो'न्दरी च़्य रुद्राणी, च़य भयानक रूप चू़य शरवरी
च़य चण्डी त्रिशूल धारणी, च़य काली कालस नाश करा'नी

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धो दृशोस्त्वद गुण-
ग्रामा कर्णन रागिता श्रवणयो स्त्वत्संस्मृतिश्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी कर युगे, त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रऽपि त्वदुपासन व्यसनिता, मे देवि ! मा शाम्यतु॥

(पं २-२७)

ही दीवी चानि दर्शनुक म्य अभिलाष, प्रथ विज़ि नेत्रन मंज़ रूज़ितन
चा'ञ गुण बोज़नुक तम्मना म्य आ'स्यतन, प्रथ विज़ि रूज़ितन म्यान्यन कनन

चा'ज्य नाम सुम्रण व्यतस मंज़ म्य गरि गरि, चा'ञ पाद्य पूज़ा म्यान्यन अथन
चा'ञ कीर्तन करव्न्य रूज़ितन वा'णी, उपासना चा'ञ कम मत म्य गछ़ितन
(आय०)

देवि ! त्वां सकृदेव यः प्रणमति, क्षोणीभृतस्तं नम-
न्त्या जन्म स्फुरदङ्घ्रि पीठ विलुठत्कोटीर कोठिच्छटाः
यस्त्वामऽर्चति सोऽर्च्यते सुरगणैर्यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्यायन्ति वामभ्रुवः

(पं० ३-३)

युस मनुष अकि लटि करि व्यय कुन प्रणाम, तस्न्ज़ि ख़्राविं प्यठ छि इन्द्राज नमान
युस मनुष करान असि माता चा'ज्य पूज़ा, पूज़न तस छि सा'री दिवता
युस मनुष करान आसि माता चा'ज्य स्तुता, तमि [illegible] अस्तुतिः छि दिवता करान
युस मनुष करान आसि माता चोनुय ध्यान, स्वर्गु चि अछ रछ तस छि स्मराण
(आय०)

किं किं दुखं दनुज दलिनि ! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुल कमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।

का का सिद्धि सुर वरनुते प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिन्वते चित्त मालम्बि तायाम्

(पं ३-१५)

कम सना दुख छि तिम ही दुखन गालवन्य, यिम गलन न चाने सुमरणि सा'त्य
को'स न नेकना'मी यो'स कुलस खारवन्य, यो'स न बनि चाने तुतायि सा'त्य
को'स को'स छि सिद्धि ही सिद्धि दात्री, यो'स न प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सा'त्य
कम कम छि तिम यूग ही ज़गत माता, यिम न् स्यद्ध बनन चानि चिन्तन् सा'त्य

(आय०)

आनन्द सुन्दर पुरन्दर, मुक्त-मालम्
मौ लौ हठेन निहितं, महिषा सुरस्या।
पादाम्बुजं यवतु मे, विजयाय मञ्जु
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरम अम्बिकाया:।

पाद चा'ञ सुन्दर आनन्द दायक, इन्द्राज़न इमन त्रा'व मुखत् माल
यमि सा'त्य ज़ीर दिच्थ महिशासुरस्य, क्षनमात्रस मंज़ सुवोत पाताल
सुय रुनिपाद चोन रूज़्यतन म्य हृदयस, युथ ब अम्बिकाय बोज़य श्रुनि श्रुनि ताल
सुय मनोहर पाद बनितन म्य हीतो, जय जय कारुक हा'वितन कमाल

(आय०)

सौन्दर्य विभ्रम युवो भुवनाधि पत्य
सम्पति कल्पतरव स्त्रिपुरे जयन्ति
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध
पूर्णन्दव स्त्वयि जगत जननि प्रणामा:

यिम प्रणाम सुन्दरक्य विलासक्य जाय बढ़ि थदि
शुमार करन् यवान त्रन भवनन हन्दि राज़्
समपदाय हुन्द कलप वृक्ष ही तिम छी प्रणाम वनान
यिम प्रणाम कविताय रूप कुमद पोश फुलरावन बापत चन्द्रम छी बनान
ही ज़गत जननी वा'त्यनय चेय म्या'नी यिथी ही प्रणाम छुस ब चेय कुन करान

(आय०)

लक्ष्मी वशीकरण चूर्ण सहोदराणि
त्वत पाद पंकजरजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृनां ललाटे
लुम्पन्ति दैवलिखतानि दुरक्षराणि।

मा'ज्य भवा'ञ लक्ष्मी वष करनस प्यठ पादच घरद चानि ताकत सुस
चानि प्रणाम विज़ि लो'ग यिमन ललाटस पादच गरद बडि निशान सुस
सुय पादच गरद गालि दुर अक्षर तस, ज़गतस मन्ज़ बनि जयकार सुस

(आय०)

रे मूढः किम् अयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते यज्ञैवी बहुदाक्षणैः किम् इतरे रिकती क्रियन्ते गृहाः भक्तिश्चत अविनाशिनी भगवती पादद्वयी सव्यताम उत्रिद्राम्बु रूहात पत्रसुयगा, लक्ष्मीः पुरोधावति।

ही मूढ कयाज़ि छुक बे फा'यदय तप किञ पननिस शरीरस तक्लीफ दिवान दान किञ यज्ञनि किञ बजि दक्षनायि किञ क्याज़ि छुक घर पनुन खा'ली करान गच्छ़ शरण माजि शारिकाय प्राव भख्ती ह्य करुन तसुनदी पादि सीवन अदह फलिमत्य पमपोश नेत्रौ सुस लक्ष्मी चे़य ब्रोंह २ हेयिय दोरन्य

(आय०)

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः
अवस्था शाम्भवीमेस्तु प्रसन्नोस्तु गुरुः सदा

रूज़्यतन सुखी माज सादक सा'री, यिम दुष्ट आसन तिम ति सेध्यतन
शिव रूप अवसथा मेति मा'ज बनितन, गुरुदेव सदा म्य प्यठ प्रसन्न रूज़्यतन
(आय०)

दर्शनात पापशमनी जपात् मृत्यु विनाशिनी
पूजिता दुःख यौभाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी

चानि दर्शन पाप सा'री छी गलान, चानि ज़ाप मृत्यू छु नाश सपदान
पूज़ाय किञ चोन महिमा ग्यान किन, ज़ीवस दुख त दा'द्य दूर तस गच्छान
(आय ०)

नमामि यामिनी नाथ लेख लङ्कृत कुन्तलाय
भवानी भवसन्ताप निर्वापण सुधा नदीम

नमस्कार छुस करान यमिस केशस मन्ज़ चन्द्रम प्रज़लान रात तय दोह
संसार दुखन छक निवारान चय अमृत नदी हन्दि प्रवाह सा'त्य ज़ान
(आय०)

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं विधि हीनं च यद् गतम्
त्वया तत्क्षम्यतां देवि ! कृपया परमेश्वरि ।

मन्त्रहीन आ'सिथ क्रियाहीन आ'सिथ, व्यधिहीन, आ'सिथ यि केंछाह पो'रुम वो'न्य हय तथ सा'रिसय ही परमेश्वरी, कृपायि किञ म्य आ'रतिस माता बखशुम आ'सि आमित एकाग्र च़्यथ बनिथ, छुय प्यवान च़्येय पादन तल परन

(आय॰)

ददातीष्टान भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन व्याधीन्श मयति सुखानि प्रतनुते।
हटाद अन्तर्दुखं दलयति पिन्ष्टी ष्टविरहं
सकृद ध्याता देवी किमिव निरवधं न कुरुते।

(पं ३-१३)

मतलब छख दिवान दुश्मनन गालान, आपदायन छक नाश करान मन क्यन रूगन माता च़य गालान, दीह चन व्या'ज़न सौ'मरावान संसारच्य यिम सुख संपदायि बजि, माता तिमन छय ब्यस्ताराम अन्दरिम दुःख त दाद्य ज़ीवस च़य गालान, यिम हय अकि लटि माता नाव चोन सो'रान तिम कम सना पापव निशि छि<u>न</u> मो'<u>क</u>लान, यिम सदा च़्यय कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान

दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति मतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चिता॥

(दु०-सप्त)

ही दुर्गे चा'ञ सुमरणि ज़ीवस, सा'री भय छि नाश सपदान
वार पा'ठ्य करिय युस चा'ञ्य सुमरण, तसय् छक ज़ानच वथ हावान
दरिद्र भाव बेयि कठिन दो'खत दा'द्य, च्येय रो'स कुस छु म्य दूर करान
उपकार छक करान तिमन सारिनय ज़ीवन, यिम सदा च्येय कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान

(आय०)

अथ ध्यानम्

गौरीश्वराय भुवनस्त्रायकारणाय
भक्तिप्रियाय भवभीतिभिदे भवाय।
शर्वाय दु:खशमनाय वृषध्वजाय
रुद्राय कालदहनाय नमः शिवाय॥

आधीनां अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनं
उपद्रुवाणां दलनं महादेवं उपास्महे

[स्वर्गीय गोविन्द स्वामिना कश्मीरी भाषायां
विरचिता गुरुस्तुति]

शिव शङ्कर भव भय हर हर लगयो चरणन्।
गुरु लगयो पादि कमलन् सत् गुरु लगयो चरितन्॥

चऱरणन् तल वाऱ वरतम वरदा छुक शरणन्
शरणय च़्यय आस कासतम मल म्य अन्तः करणन्
कर शङ्कर कर रटहम कर अर हर मरणन्
मर मर छुम ज़्यन मरनुक अमरेश्वर भगवन्
पादि कमलन तल म्य पालतम पालवुन छुक कालहन्
हनि हनि शिव चऱय वछ्हथ यव दुय गलि हन हन्।१।

शिव॰

दय अदुय दय म्य गच्छ़तम कर दय दय निश दिन
दीन दयाल कन म्य थावतम दीन वचऱनन् त वदनन्
ज़ार ज़ार छुम ज़ो'ज़रनकुय ज़ुरनावतम मत्य हन्
हननावन मननावतम मन्य मो'ह युथ मुनियन्
देह पुष्ट मन तुष्ट थावतम देव जुष्ट छुक दुष्टहन्

पानै ईश्वर पानै तोषतम् पान वन्दयो तोषणन् ।२।
शिव॰

अन्त कुस ज़ानि च़्य अनन्तस सन्त व्यसरेय चिन्तनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्ती यति वेद लगि पन्थनन्
ब्रह्मादिक ति ग'य मोहस तत्त्व चोन क्या व्यज़ारन्
तत्पुरुष च़य तत्त्व म्य भावतम वथ म्य हावतम ज़ाननन्
गथ च़य सिद्ध शुद्ध मुनियन सथ छम शाप मोच़नन्
शाप मोच़न ज्ञान लो'च़न पा'र्य आ'र्या लोच़नन्
शिव॰।३।

तीज़ो रूप तेज़ चय छुक सो'म सूर्यन त अग्नन्
तीज़ो रूप च़य भासान वाह्य अन्तर यूगियन्
स्वप्रकाशत स्वानुभवगुम, शान्त तीजः ज्ञानियन्
ज़ान ज़ानिन ज़ाननीय च़य क्याह ब़ ज़ान
च्यान्य ज़ान्य व्यन्

शिव म्यत्य दित कर्मसुम स्यज़ ज़ान यिछ़ ज़नकादिकन्
ज्ञान उपदेश पान वरतम फ़र अज्ञान पटलन्।४।
शिव॰

निष्कारण सर्व कारण च़य कारण कारणन्
त्रेकारण च़य कारण सृष्ट स्थित तय प्रलयन्
च़य कर्ता च़य भर्ता च़य हर्ता ज़गतन्
व्याप्य व्यापक भाव व्यापित च़य निरन्तर भवनन्
भोज़ि क्याह वन च़ ज़ि क्याह छुक युस न
ज़ोन कांसि ज़ा'न्य व्यन्
ज़ान सा'रुय चा'न्य दया चा'न्य कृपा भगवन्।५।
शिव॰

देव पज़्य छुक देव पूज़नीय पूज़ा व्यध पूज़नन्
विज़ि विज़ि बोज़ि पज़ि पूज़हथ युथ पूज़नख विष्णन

भाव बामन फोलना'विथ माल करहय कौसमन्
बो सो'मन्य व्यन लागहय भ्ययि गोंध्य करहय कौमुदन
सो वुन्द यछ़ि पछ़ि हन्दय् पोष लागहय पाद कमलन्
पाद कमलन तल म्य पालतम तल ह्यथ विघ्नन्।६।

शिव॰

शुद्ध निर्मल शिव पूज़हथ यव सपन्य शुद्ध मन्
शुद्ध मन च्यय ध्यान धा'रिथ शुद्ध स्फाटिक विकसन
नील कण्ठस च्य हटि वासुक च़ित्त आत्मस तमोगुण
सुधा धारा गङ्ग ह्यरि शेरि छय तारवज सुज़ि नरकन्
शिवा धा'रमच़ वाम भागस च़ित् शक्ति च़ित् आत्मन्
धर्म रूप बृषभ वगि त्रिशूल त्रि अवस्थायि अथि सन्।७।

शिव॰

श्वेत सुन्दर छोत भस्मा तनि प्रकट योय सत्वोगुण
मुण्ड माला गलि गन्डमच़ रोष को'रमुत इन्द्रियन्
क्याह छय जटा मुकट शोभान छ़ल गो'ण्डमुत रजोगुण
टे'कि शाय हिरि डे'कि चन्द्रम प्रकटयुय च्योन शुद्ध मन
दिक् वासन निर्वासन छय वास च्योन मन्य सुमनन्
त्रिधाम छुक ज्ञान बुज़तय त्रिकार रूप त्रिनयन्।८।

शिव॰

मायातीत माया चा'न्य त्रिगुंण सा'त्य विकसन्
निर्गुण छुक च गुण उल्लङ्गित माया गुण विलसन्
भूत भावत भूत पंचक देह खर कुर अहमन्
दह इन्द्रिय मन बुध ह्यथ प्राणबल सा'त्य प्रसरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन ज़ीवभावस कुर शयन
तदात्म भाव देह कुय लोभ प्रकृत बल ज़ीवनन्।९।

मोह ज़ाल सा'त्य ज़ीव गण्डनय आव कर्मन्यन बन्धनन्
काम क्रोधन स्थित रटनस प्यठ मनस बुज त इन्द्रियन
द्वन्द्व भावत रागद्वेष सा'त्य काप्य लो'ग षट् शुत्रन
गुण सङ्ग सा'त्य इत गछ़िय लो'ग पुण्य पाप वश बांधज़न
मु'कजारुक उपाय च़य शिव मोक्षदा छुक भक्तय्न
भवबन्धन मोकलावतम छुक च़य भव भयहन।१०।

शिव०

निष्प्यपञ्च च्योन सोरुय प्रपञ्च वाञ्छ छम कस बर कन
वेनच़ क्याह कर चञ्चल मन संसार क्यन ख्येंचलन
पञ्चवदत मुकलावतम केंह अन्त छुम न च्यान्य व्यन
हरे हर विरिञ्च बोज़तम क्याह वन पञ्च दैवतन
कुनि कुनि कुनि कुनोय तोषतम केंह अन्त छुन हेरि बुन
रुति मुख सुख मुख वरतम मुख सुन्दर दुःख हन।११।

शिव०

सुम दितम संपदा यव सुम रोज़हा समयन
सुमयस गछ़िय चा'न्य दया लगि सुम स्यज़ कर्मन
सोम सोमरस प्रथ गुण किञ्य समयन तय साधनन
सुम आहार सुम व्यवहार सुम निद्रा त जागरण
संभा'लिथ पानस सुम सुम शुज़ारिथ शायहन
लग्य समाध योग सुम स्यज़ विज़ि सतगुरु वचनन्।१२।

शिवः

भक्ति प्रिय भक्ति दायक दय युस इच्छ़हन भक्ति ज़न
भक्ति भावत् भक्ति भावनाय च़्यय कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छ़लबल बल फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धा'रिथ रटि प्राण बुद्ध चि़त त़ मन
यम नियम शम दम सम्य मन सुरि सुय दय क्षण क्षण
मन ज़ीनिथ पुज़ चीनिथ गछ़ि ज़ीनिथ भवनन्।१३।

यस संस्त्रति पो'त अच्य मन सुस्त आ'स्यतन विभवन
लोर आ'स्यन अन्न धन्न घरबारन त सन्तनन्
व्यवहार च्यन काम्यन प्यठ परद्यन हंज्य काम्य ज़ान
प्रारब्धुक भोग भोगान भोगवुन ज़ान स्वप्नन्
रागीज़ान सार्यसय सा'त्य त्यागिथ सर्व कामनन्
गच्छि़ संसार सर त'रिथ लड करान सूह ज़न्।१४।

शिव॰

युदवै कां'सि ओरै यियि मंग संग मेल्यस साधुज़ान
साधुज़ान युस सम्य चित्ततय ममताय निश आसि भिन्न
भ्युन्न रुति क्रुति द्वन्द्व भावन छ़यन दिथ सर्व कामनन्न
शम दम ज्ञान विज्ञान सुस्त रुस्त कपटन त़ कल्पनन्
ब्रह्म तत्पर आस्य आस्यस परेहट सर्व विषयन
बोड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्योथ "लभ्य ज्योव" ह्योह साधुज़ान।१५।

शिव॰

युस कांह यछि़ पानस रुत क्रुत त्रावि प्रावि शुद्ध मन
शुद्ध मन भक्ति भावतगुण् कन था'वि साधु वचनन्
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत ज़ाग्य ज़ाग ह्यथ समयन
समय वात्यस शम यम नियम पानै ता'र्य तस मुच़रन
दीन दयाल हे कृपाल कां'स्य गथ छयन चा'ञ्य ब्यन
सत भाव छुम सथ चा'नी सत गथ दिम भगवन्।१६।

शिव०

त्यलि च़्यूनुम भुज़ि क्याह छुस यलि वा'च़म चे़नवन
चे़नन आयम दया चान्य चे़ननावान सेवकन
भक्त युदवै मुक्त थावहम मुक्त छुस निष बन्धनन्
सुप्रकाशत अविनाशी मा'श्यविथ ज़्यन मरणनन
सत चि़त आनन्द रूपस स्थित न्यथ ह्यथ निर्गुण गुण
प'ज दया चा'ञ सारुय करि क्याह म्यज्य वन वन।१७।

शांत निर्मल भ्रांत छयम चाञ्य मानतम सा'र वन वन
अख शुभ दृष्टि शिव करतम नाव च्युन शुभि अशुभन
शुभदायक शुभ दृष्टि चाञ्य सार शोभा शोभनन
शोभवुन चय त्रिण भवनन शूभ्रहथ पुष वर्षणन
शूभरावतम ज्ञान सम्पदा शूभ युथ ययि जगतन
शोभ सारुय च्यञ्य दया च्यञ्य कृपा भगवन्।१८।

शिव॰

अविनाश ब'ड आश पूरतम नाश करहा कल्पनन
आशा पूर आशा चा'ञय आश छम राश पपनन
घटि हन्दि घाश चित्त प्रकाश घाश अनतम नेत्रन
माशविथ रूज़ि सर्व कल्पनन नाशविथ सर्व वासनन
पर्म प्रकाश शान्त प्रकाश चय घाशुर घाशरन
परि "प्रसाद" गूर प्रसाद गुरु प्रसाद भगवन्।१९।

शिव॰

संसारचिय छ़ो'च आशा शुर्य मुर्य तय सन्तनन्
भा'य बन्ध तय धन संपत घरबार तय स्त्रीज़न
सोर असोर भ्रम सोरुय मृगतृष्णा यत्य ज़ान
शिव च़य म्या'ञ शुर्य मुर्य तय भा'य बन्ध तय सा'रीज़न
च़य मोल माज्य च़य घरबार च़य संपत त द्यार धन
च़य सोरुय च़य सा'रिय सार रोज़तम भगवन्।२०।

शिव०

लूभ छुम न स्वर्गन हुन्द क्षूभ तिन भ्ययि नरकुन
रुत क्रुत सु'ख दुः'ख भूगान फल पनञ्यन कर्मन
हर नाव थर थर अच़ान दूरि दूरि यम किंकरण
शिव भक्त संज़ सहाय छ़ांडान माय पनञ देवगण
अख शो'भ दृष्टि शिव छ़्म चाञ्य लछ विभवन त स्वर्गन
सुय शुभ दृष्टि शिव करतम पानै वरतम भगवन्।२१।

नौ ना'थीश्वर च़य छुक नव निधान सेवकन
नव्य खुत नुव नुव ब वुछहथ लगि नुव नुव नवनन्
नव गंडिथ नव रटिथ प्रणव नव व्यवहारन
नव दक्षिपाल ह्यथ रुज़ातम ईश राच्छ निश विघ्मन
नवदुर्गा करि पक्ष म्युन युस रक्षक छ शरणन्
नव द्वार पुर खस वोफ ह्यथ नवनीय शेव भवनन्।२२।
शिव शंकर भव भय हर हर लगयो च़रणन्।
गुरु लगयो पादि कमलन सत्गुरु लगयो च़रितन्॥

अथ भवानी नाम सहस्त्र स्तुतिः

ॐ नमो भवान्यै ॥

ॐ अरि शंख कृपाण खेट बाणान्
सुधनुः शुलक तर्जनी दधाना
भवतां महिषोत्तमाङ्ग संस्थां,
नवदूर्वा सदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा
ॐ शङ्ख त्रिशूल शरचापकरां त्रिनेत्रां,
तिग्मेतरांशुकलया विलसत्किरीटाम्।
सिंहस्थिताम सुरसिद्धनुतां च दुर्गां,
दूर्वांनिभां दुरितदुः खहरां नमामि। १।
अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ती,
मधुरमधुपिवन्ती कण्टकान्भक्षयन्ती।

दुरितम पहरन्ती साधकान्पोषयन्ती,

जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीडयन्ती। २।

चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दु वदनप्रभाम्,

खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम्। ३।

प्रतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम्,

भवानीं कालसंहार बद्धमुद्राविभूषिताम्। ४।

जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः,

स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम्। ५।

ॐ नमो भवान्यै

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम्,

ध्यानोपरतमसीनं प्रसन्नमुख पङ्कजम्। ६।

सुरासुर शिरोरत्नरञ्जिताङ्घ्रियुगं प्रभुम्,
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत। ७।

श्रीनन्दिकेश्वर उवाच।

देवदेव जगन्नाथ संशयोस्ति महान्मम्,
रहस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तवत्सलम्। ८।
देवतायास्त्वया कस्याः स्तोत्रमेतद्दि वानिशम्,
पठ्यतेऽविरतं नाथ! त्वत्तः किमपरं परम्। ९।
इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरुः,
प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्रपङ्कजः। १०।

श्री भगवानुवाच।

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत्,
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यं कथयामि तत्। ११।

पुरा कल्पक्षये लोकान्सि सृक्षुर्मूढचेतसा,

गुणत्रयमयी शक्तिर्मूलप्रकृति संज्ञिता। १२।

तस्यामहं समुत्पन्न स्तत्त्वैस्तैर्महदा दिभिः,

चैतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्य तस्थुषी। १३।

हेतुः सकल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा,

इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततः परम्। १४।

ततो वागिति विख्याता शक्तिः शब्दमयी परा,

प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता, सरस्वती। १५।

ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा,

सिद्धिददा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी। १६।

तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते,

तयैतत्पाल्यते सर्व तस्यामेव प्रलीयते। १७।

अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता,

आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी। १८।

तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानह्म,

सहस्त्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्य प्राणिपूजितै। १९।

स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा,

तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वरं पदमुत्तमम्। २०।

तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतत् चराचरम्,

ससुरासुरगन्धर्व यक्ष राक्षसमानवम्। २१।

सपन्नगं साब्धिकं च सशैल वनकाननम्,

सराशिग्रहनक्षत्रं पंचभून गुणान्वितम्। २२।

नन्दिन्नाम सहस्त्रेण स्तवेनानेन सर्वदा,

स्तवे परापरां शक्तिं ममानुग्रह कारिणीम्। २३।

इत्युक्तोपरतं देवं चराचर गुरुं विभुम्,

प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ।२४।

श्री नन्दिकेश्वर उवाच।

भगवन्देव देवेश लोक नाथ जगत्पते,

भक्तोऽस्मि तव दासोऽस्मि प्रसादः क्रियतां मयि। २५।

देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि,

श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभावमपि चास्य तु। २६।

श्री भगवानुवाच।

श्रृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम्,

सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम्। २७।

शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः,

त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः। २८।

अस्य श्री भवानीनाम सहस्त्रस्तव राजस्य, महादेव-ऋषि:, अनुष्टुप्छन्द:, आद्यशक्ति:, भगवती भवानी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्ति:, क्लीं कीलकं, आत्मनो वाङ्मन: कायोपार्जित पापनिवारणार्थे, सकल कामना सिद्ध्यर्थे पाठे/होमो विनियोग:।

अथ करन्यास:

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नम:।

ॐ महा मायायै तर्जनीभ्यां नम:।

ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नम:।

ॐ गिरीशप्रियायै अनामिकाभ्यां नम:।

ॐ गौर्यै कनिष्ठकाभ्यां नम:।

ॐ करालिन्यै करतल करपृष्ठाभ्यां नम:।

अथ षडङ्गन्यासः।

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः।

ॐ महामायै शिरसे स्वाहा।

ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्।

ॐ गिरीश प्रियायै कवचायहुम्।

ॐ गौर्यै नैत्राभ्भां वौषट्।

ॐ करालिन्यै अस्त्रायफट्।

ततः प्राणायामः

अथ ध्यानम्

अर्धेन्दु मौलिमम लाममरा भिवन्द्याम-
म्भोजपाश सृणिरक्त कपालहस्ताम्।

रक्ताङ्गरा गरशना भरणां त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह् वलाङ्गीम्।

बालार्कमण्डला भासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे।

ॐ बीज त्रयायै विद्महे, तत्प्रधानायै
धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।३।

मूलम्-ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं
भवानि हुं फट् स्वाहा। २०८।

श्री ईश्वर उवाच

ॐ महाविद्या जगन्माता महालक्ष्मीः शिवप्रिया,
विष्णुमाया शुभा शान्ता सिद्धा सिद्ध सरस्वती।१।

क्षमा कान्तिः, प्रभा ज्योत्स्ना पार्वती सर्वमङ्गला,

हिङ्गुला चण्डिका दान्ता पद्मा लक्ष्मीर्हरिप्रिया। २।

त्रिपुरा नन्दिनी नन्दा सुनन्दा सुरवन्दिता,

यज्ञविद्या महामाया वेदमाता सुधा धृतिः। ३।

प्रीतिर्प्रथा प्रसिद्धा च मृडानी विन्ध्यवासिनी,

सिद्ध विद्या महाशक्तिः पृथ्वी नारदसेविता। ४।

पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पद्मलोचना,

प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी। ५।

ज्वालामुखी सुगोत्रा च ज्योतिः कुमुदहासिनी,

दुर्गमा दुर्लभा विद्या स्वर्गतिः पुरवासिनी। ६।

अपर्णा शाम्बरी माया मदिरा मृदुहासिनी,

कुलवागीश्वरी नित्या नित्यक्लिन्ना कृशोदरी। ७।

कामेश्वरी च नीला च भीरुण्डा वह्नि नवासिनी,
लम्बोदरी महाकाली विद्याविद्येश्वरी तथा। ८।
नरेश्वरी च सत्या च सर्व सौभाग्यवर्धिनी,
संकर्षणी नारसिंही वैष्णवी च महोदरी। ९।
कोत्यायनी च चम्पा च सर्वसम्पत्तिकारिणी,
नारायणी महानिद्रा योगनिद्रा प्रभावती। १०।
प्रज्ञापाःरमिता प्रज्ञ तारा मधुमती मधुः,
क्षीरार्णवसुधाहारा कालिका सिंहवाहिनी। ११।
ओंकारा वसुधाकारा चेतना कोपना कृतिः,
अर्धबिन्दुधरा धारा विश्वमाता कलावती। १२।
पद्मावती सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती,
कुण्डासना जगद् धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी। १३।

जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसवाह्ना,

राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा सुधाकारा सुधात्मिका। १४।

राज्यनीतिस्त्रयी वार्ता दण्डनीतिः क्रियावती,

सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा सद्गतिः सत्परायणा। १५।

सिन्धुर्मन्दाकिनी गंगा यमुना च सरस्वती.

गोदावरी विपाशा च कावेरी च शतद्रुका। १६।

सरयूश्चन्द्रभागा च कौशिकी गण्डकी शुचिः,

नर्मदा कर्मनाश च चर्मण्वत्यथदेविका। १७।

वेत्रवती वितस्ता च वरदा नरवाह्ना,

सती पवित्रा साध्वी सुचक्षः कुण्डवासिनी। १८।

एकचक्षुः सहस्राक्षी सुश्रोणिर्भग मालिनी,

सेना श्रेणिः पताका च सुव्यूहा युद्धकांक्षिणी। १९।

पताकिनी दयारम्भा विपञ्ची पञ्चमप्रिया,
परापरकला कान्ता त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी। २०।

ऐन्द्री महेश्वरी ब्रह्मी कौमारी कुलवासिनी,
इच्छा भगवती शक्तिः कामधेनुः कृपावती॥ २१।

वज्रायुधा वज्रहस्ता चण्डी चण्डपराक्रमा,
गौरी सुवर्णवर्णा च स्थिति संहारकारिणी। २२।

एकानेका महेज्या च शतबाहुर्महा भुजा,
भुजङ्गभूषणा भूषा षट्चक्र क्रमवासिनी। २३।

षट्चक्र भेदिनी श्यामा कायस्था कायवर्जिता,
सुस्मिता सुमुखी क्षामा मूलप्रकृतिः ईश्वरी।२४।

अजा च बहुवर्णा च पुरुषार्थ प्रवर्तिनी,
रक्ता नीला सिता श्यामा कृष्णा पीता च कर्बुरा।२५।

क्षुधा तृष्णा जरावृद्धा तरुणी करुणालया,

कला काष्टा मुहूर्ता च निमेषा कालरूपिणी ।२६ ।

सुकर्णरसना नासा चक्षुःस्पर्शवती रसा,

गन्धप्रिया सुगन्धा च सुस्पर्शा च मनोगतिः ।२७ ।

मृगना भिर्मृगाक्षी च कर्पूरामोद धारिणी,

पद्मयोनिः सुकेशी च सुलिङ्गा भगरूपिनी ।२८ ।

योनिमुद्रा महामुद्रा खेचरी खगगामिनी,

मधश्रीर्माधवीवल्ली मधुमत्ता मदोद्धता ।२९ ।

मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणेक्षचापिनी,

रक्ताम्बरधरा क्षीबा रक्तपुष्पा वतंसिनी ।३० ।

शुभ्राम्बरधरा धीरा महाश्वेता वसुप्रिया,

सुवेणिः पद्महस्ता च मुक्ताहार विभूषणा ।३१ ।

कर्पूरामोद निःश्वासा पद्मिनी पद्म मन्दिरा,
खड्गिनी चक्रहस्ता च भुसुण्डी परिधायुधा। ३२।

चापिनी पाशहस्ता च त्रिशूल वरधारिनी,
सुबाणा शक्तिहस्ता च मयूर वरवाहना।३३।

वरा युधधरा वीरा वीरपान मदोत्कटा,
वसुधा वसुधारा च जया शाकम्भरी शिवा। ३४।

विजया च जयन्ती च सुस्तनी शत्रु नाशिनी,
अन्तर्वत्नी वेदशक्तिर्वरदा वरधारिणी। ३५।

शीतला च सुशीला च बालग्रह विनाशिनी,
कुमारी च सुपर्वा च कामाख्या कामवन्दिता। ३६।

जालन्धर धराऽनन्ता कामरूप निवासिनी,
कामबीजवती सत्या सत्यधर्म परायणा। ३७।

स्थूल मार्गस्थिता सूक्ष्मा सूक्ष्म बुद्धिप्रबोधिनी,
षट्कोणा च त्रिकोणा च त्रिनेत्रा त्रिपुर सुन्दरी। ३८।

वृषप्रिया वृषारूढा महिषासुर घातिनी,
सुम्भदर्पहरा दीप्ता दीप्तपाव कसत्रिभा। ३९।

कपाल भूषणा काली कपाल मालभारिणी,
कपाल कुण्डला दीर्घा शिवादूती घनध्वनिः। ४०।

सिद्धदा बुद्धिदा नित्या सत्यमार्ग प्रबोदिनी,
कम्बुग्रीवा वसुमती छत्रच्छाया कृतालया। ४१।

जगद् गर्भा कुण्डलिनी भुजगाकार शायिनी,
प्रोल्लसत्सप्त पद्मा च नाभिनालमृणालिनी। ४२।

मूलाधारा निराकारा वह्निकुण्ड कृतालया,
वायुकुण्ड सुखासीना निराधारा निराश्रया। ४३।

श्वासोच्छवासगतिर्जीवा ग्राहिणी वाह्निसंश्रया,.
वह्नितन्तु समुत्थाना षड्रसास्वा दलोलुपा। ४४।

तपस्विनी तपःसिद्धिः तापसी च तपः प्रिया,
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तपसः सिद्धिदायिन। ४५।

सप्तधातुमयी मूर्तिः सप्तधा त्वन्तराश्रया,
देहपुष्टिर्मन स्तुष्टिरन्त पुष्टिर्बलोद्धता। ४६।

ओषधिः वैद्यमाता च द्रव्यशक्तिः प्रभाविनी,
वैद्या वैद्य चिकित्सा च सुपथ्या रोगनाशिनी। ४७।

मृगया मृगमांसादा मृगत्वङ् मृगलोचनी,
वागुरा बन्धरूपा च वधरूपा वधोद्धता। ४८।

बन्दी बन्दिस्तुताकारा काराबन्ध विमोचना,
श्रृङ्खला खलहा विद्युद् दृढबन्ध विमोचनी। ४९।

अम्बिकाऽम्बालिका चाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता,
कौलिकी कुलविद्या च सुकुला कुल पूजिता ।५०।

कालचक्र भ्रमा भ्रान्ता विभ्रमा भ्रमनाशिनी,
वात्याली मेघमाला च सुवृष्टि: सस्यवर्द्धिनी ।५१।

अकारा च इकारा च उकारैकार रूपिणी,
ह्रींकारी बीजरूपा च क्लींकारम्बर वासिनी ।५२।

सर्वाक्षरमयी शक्तिरक्षरा वर्णमालिनी।
सिन्दूरा रुणवक्त्रा च सिन्दूरतिलकप्रिया ।५३।

वश्या च वश्यबीजा च लोकवश्य विभाविनी।
नृपवश्या नृपै:सेव्या नृपवश्यकरी क्रिया ।५४।

महिषी, नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी,
नृपधर्ममयी धन्या धनधान्य विवर्द्धिनी ।५५।

चतुर्वर्णमयी मूर्तिश्चतुर्वर्णैश्च पूजिता,
सर्वधर्ममयी सिद्धश्चतुराश्रम वासिनी ।५६।

ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्राचा वरवर्णजा,
वेदमार्गरता यज्ञा वेदविश्व विभाविनी ।५७।

अस्त्रशस्त्रमयी विद्या वरशस्त्रास्त्र धारिणी,
सुमेधा सत्यमेधा च भद्रकाल्यऽपराजिता ।५८।

गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या सावित्री त्रिपदाश्रया,
त्रिसन्ध्या त्रिपदी छात्री सुपर्वा सामगायनी ।५९।

पाञ्चाली बालिका बाला बालक्रीडा सनातनी,
गर्भाधारधरा शून्या गर्भाशयनिवासिनी ।६०।

सुरारिघातिनीकृत्या पूतना च तिलोत्तमा,
लज्जा रसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ।६१।

पट्टाम्बराधरा गीतिः सुगीतिर्ज्ञानलोचना,
सप्तस्वरमयीतन्त्री षड्जमध्यमधैवता ।६२।

मूर्च्छनाग्रामसंस्थाना स्वस्था स्वस्थानवासिनी,
अट्टाट्टहासिनी प्रेता प्रेतासननिवासिनी ।६३।

नृत्तगीतप्रियाऽकामा तुष्टिदा पुष्टिदाक्षया,
निष्ठा सत्यप्रिया प्रज्ञा लोकेशी च सुरोत्तमा ।६४।

सविषा ज्वालिनी ज्वाला विषमोहार्तिनाशिनी,
विषारिर्नागदमनी कुरुकुल्लाऽमृतोद्भवा ।६५।

भूतभीतिहरा रक्षा भूतावेशविनाशिनी,
रक्षोघ्नी राक्षसी रात्रिर्दीर्घनिद्रा दिवागतिः ।६६।

चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च सूर्यकान्तिर्निशाचरी,
डाकिनी शाकिनी शिष्या हाकिनी चक्रवाकिनी ।६७।

सितासितप्रिया स्वङ्गा सकला वनदेवता,
गुरुरूपधरा गुर्वी मृत्युर्मारी विशारदा ।६८।

महामारी विनिद्रा च तन्द्रा मृत्युविनाशनी,
चन्द्रमण्डलसंकाशा चन्द्रमण्डलवासिनी ।६९।

अणिमादिगुणोपेता सुस्पृहा कामरूपिणी,
अष्टसिद्धिप्रदा प्रौढा दुष्टदानवघातिनी ।७०।

अनादि निधना पुष्टिश्चतुर्बाहुर्चतुर्मुखी,
चतुःसमुद्र शयना चतुर्वर्गफल प्रदा ।७१।

काशपुष्प प्रतीकाशा शरत्कुमुद लोचना,
भूता भव्या भविष्या च शैलजा शैलवासिनी ।७२।

वाम मार्गरता वामा शिवा वामाङ्ग वासिनी,
वामाचारप्रिया तुष्टा लोपामुद्रा प्रबोधिनी ।७३।

भूतात्मा परमात्मा च भूतभाविविभाविनी,
मङ्गला च सुशीला च परमार्थप्रबोधिका ।७४।

दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदक्षिणा हरिप्रिया,
योगिनी योगयुक्ता च योगाङ्गा ध्यानशालिनी ।७५।

योगपट्टधरा मुक्ता मुक्तानां परमागतिः,
नारसिंही सुजन्मा च त्रिवर्गफलदायिनी ।७६।

धर्मदा धनदा चैव कामदा मोक्षदा द्युतिः,
साक्षिणी क्षणदा दक्षा दक्षजा कोटिरूपिणी ।७७।

क्रतुः कात्यायनी स्वच्छा स्वच्छन्दा च कविप्रिया
सत्यागमा बहिःस्था च काव्यशक्तिः कवित्वदा ।७८।

मेनापुत्री सती माता मैनकाभगिनी तडित्,
सौदामिनी स्वधामा च सुधामा धामशालिनी ।७९।

सौभाग्यदायिनीद्यौश्च सुभगा द्युतिवर्द्धिनी,
श्रीः कृत्तिवसना चैव कङ्काली कलिनाशिनी ।८०।

रक्तबीज वधोद्दृप्ता सुतन्तुर्बीज सन्ततिः,
जगज्जीवा जगद्बीजा जगत्त्रयहितैषिणी ।८१।

चामीकररुचि श्चान्द्रीसाक्षया षोडशीकला,
यत्तत्पदानुबन्धा च यक्षिणी धनदार्चिता ।८२।

चित्रिणी चित्रमाया च विचित्रा भुवनेश्वरी,
चामुण्डा मुण्डहस्ता च चण्डमुण्ड वधोद्धुरा ।८३।

अष्टम्येकादशी पूर्णा नवमी च चतुर्दशी,
अमा कलशहस्ता च पूर्ण कुम्भधरा धरा ।८४।

अभीरुर्भैरवी भीमा भीरा त्रिपुरभैरवी,
महारुण्डा च रौद्री च महाभैरवपूजिता ।८५।

निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा करालदशनानना,
कराला विकराला च घोरघुर्घुरनादिनी ।८६।

रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च बन्धूककुसुमारुणा,
कादम्बरी पटासा च काश्मीरी कुङ्कुम प्रिया ।८७।

क्षान्तिर्बहु सुवर्णा च रतिर्बहु सुवर्णदा,
मातङ्गिनी वरारोहा मत्तमातङ्गगामिनी ।८८।

हिंसा हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वल शिरोरुहा,
पूर्णचन्द्रमुखी श्यामा स्मितास्या श्यामकुण्डला ।८९।

मषी च लेखिनी लेख्या सुलेखा लेखकप्रिया,
शङ्खिनी शङ्खहस्ता च जलस्था जलदेवता ।९०।

कुरुक्षेत्रावनिः काशी मथुरा काञ्च्यवन्तिका,
अयोध्या द्वारका माया तीर्था तीर्थकरप्रिया ।९१।

त्रिपुष्कराऽप्रमेया च कोशस्था कोशवासिनी,
कौशिकी तु कुशावर्ता कौशाम्बी कोशवर्द्धिनी ।९२।

कोशदा पद्मकोशाक्षी कुसुमा कुसुमप्रिया,
तोतुला च तुलाकोटिः कूटस्था कोटराश्रया ।९३।

स्वयम्भूश्च सुरूपा च स्वरूपा रूपवर्द्धिनी,
तेजस्विनी सुभिक्षा च वलदा बलदायिनी ।९४।

माहाकोशी महावर्ता बुद्धिः सदसदात्मिका,
महाग्रहहरा सौम्या विशोका शोकनाशिनी ।९५।

सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च राजसी च रजोवृता,
तामसी च तमोयुक्ता गुणत्रयविभाविनी ।९६।

अव्यक्ता व्यक्तरूपा च वेदविद्या च शाम्भवी,
शंकराकल्पिनीकल्पा मनः संकल्पसन्ततिः ।९७।

सर्वलोकमयीशक्तिः सर्वश्रवण गोचरा,
सर्वज्ञानवतीवाञ्छा सर्वतत्त्वानुबोधिनी ।९८।

जाग्रती च सुषुप्तिश्च स्वप्नावस्था तुरीयका,
त्वरा मन्दगतिर्मन्दा मदिरामोद धारिणी ।९९।

पानभूमिः पानपात्रा पानदान करोद्यता,
आघूर्णारुणनेत्रा च किञ्चिदव्यक्तभाषिणी ।१००।

आशापूरा च दीक्षा च दक्षा दीक्षित पूजिता,
नागवल्ली नागकन्या भोगिनी भोगवल्लभा ।१०१।

सर्वशास्त्रवती विद्या सुस्मृतिर्धर्म वादिनी,
श्रुतिः श्रुतिधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा पातालवासिनी ।१०२।

मीममांसा तर्कविद्या च सुभक्तिर्भक्त वत्सला,
सुनाभिर्यातना जातिर्गम्भीरा भाववर्जिता ।१०३।

नागपाश धरामूर्तिरगाधा नागकुण्डला,
सुचक्रा चक्रमध्यस्था चक्रकोण निवासिनी।१०४।

सर्वमन्त्र मयीविद्या सर्वमन्त्राक्षरावलिः,
मधुस्त्रवा स्त्रवन्ती च भ्रामरी भ्रमरालका।१०५।

मातृमण्डल मध्यस्था मातृमण्डल वासिनी,
कुमारजननी क्रूरा सुमुखी ज्वरनाशिनी।१०६।

अतीता विद्यमाना च भाविनी प्रीतिमञ्जरी,
सर्वसौख्यवती युक्तिराहार परिणामिणी।१०७।

निदानं पञ्चभूतानां भवसागर तारिणी,
अक्रूरा च ग्रहवती विग्रहा ग्रहवर्जिता।१०८।

रोहिणी भूमिगर्भा च कालभूः कालवर्तिनी,
कलंकरहिता नारी चतुष्षष्ट्य भिद्यावती।१०९।

जीर्णा च जीर्णवस्त्रा च नूतना नववल्लभा,
अरजा च रतिः प्रीति रतिरागविवर्द्धिनी ।११०।

पञ्चवात गतिर्भिन्ना पञ्चश्लेष्मा शयाधरा,
पञ्चपित्तवतीशक्तिः पञ्चस्थान विबोधिनी ।१११।

उदक्या च वृषस्यन्ती बहिःप्रस्त्रविणी त्र्यहम्,
रजः शुक्रधरा शक्तिर्जरायुर्गर्भ धारिणी ।११२।

त्रिकालज्ञा त्रिलिङ्गा च त्रिमूर्तिः त्रिपुर वासिनी,
अरागा शिवतत्त्वा च कामतत्त्वानुरागिणी ।११३।

प्राच्यवाची प्रतीचीदिक् उदीचीदिक् विदिग्दिशाम्,
अहंकृतिर हंकारा बलिमाया बलिप्रिया ।११४।

स्त्रुकस्त्रुवा सामिधेनी च सश्रद्धा श्राद्ध देवता,
माता मातामही तृप्तिः पितृमाता पितामही ।११५।

स्नुषा दौहित्रिणी पुत्री पौत्री नप्त्री शिशुप्रिया,
स्तनदा स्तनधारा च विश्वयोनिः स्तनन्धयी ।११६।

शिशूत्सङ्गधरा दोला दोलाक्रीडा भिनन्दिनी,
उर्वशी कदली केका विशिखा शिखिनर्तिनी ।११७।

खट्वाङ्ग धारिणी खट्वा बाण पुङ्खानुवर्तिनी,
लक्ष्यप्राप्तिः कलालक्ष्या लक्ष्या च शुभ लक्षणा ।११८।

वर्तिनी सुपथा चारा परिखा च खनिर्वृतिः,
प्राकारवलया वेला मर्यादा च महोदधौ ।११९।

पौषणी शोषणी शक्तिर्दीर्घ केशा सुलोमशा,
ललिता मांसला तन्वी वेदवेदाङ्ग धारिणी ।१२०।

नरा सृक्पानमत्ता च नरमुण्डा स्थिभूषणा,
अक्षरक्रीडारतिः शारी शारिका शुकभाषिणी ।१२१।

शाम्बरी गारुडी विद्या वारुणी वरुणार्चिता,
वाराही मुण्डहस्ता च दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरा ।१२२।

मीनमूर्तिधरा मूर्त्ता वन्दया प्रतिमश्रया,
अमूर्ता निधिरूपा च सालिग्रामशिलाशुचिः ।१२३।

स्मृतिः संस्काररूपा च सुसंस्कारा च संस्कृतिः,
प्राकृता देशभाषा च गाथा गीतिः प्रहेलिका ।१२४।

इडा च पिङ्गला पिङ्गा सुषुम्णा सूर्यवाहिनी,
शशिस्त्रवा च तालुस्था काकिन्यमृतजीविनी ।१२५।

अणुरूपा वृहद्रूपा लघुरूपा गुरुस्थिरा,
स्थावरा जङ्गमा देवी कृतकर्मफल प्रदा ।१२६।

विषयाक्रान्तदेहा च निर्विशेषा जितेन्द्रिया,
विश्वरूपा चिदानन्दा परब्रह्म प्रबोधिनी ।१२७।

निर्विकारा च निर्वैरा विरतिः सत्यवर्धिनी,
पुरुषाज्ञा च भिन्ना च क्षान्तिः कैवल्यदायिनी ।१२८।

विविक्त सेविनी प्रज्ञाजनयित्री बहुश्रुतिः,
निरीहा च समस्तैका सर्वलोकैकसेविता ।१२९।

सेवा सेवाप्रिया सेव्या सेवाफलविवर्द्धिनी,
कलौ कल्किप्रिया काली दुष्टम्लेच्छविनाशिनी ।१३०।

प्रत्यञ्चा च धनुर्यष्टिः खड्गधारा दुरानतिः,
अश्वप्लुतिश्च वल्गा च सृणिः सन्मत्तवारणा ।१३१।

वीरभूः, वीरमाता च वीरसूः वीर नन्दिनी ।
जयश्रीः जय दीक्षा च जयदा जयवर्धिनी ।१३२।

सौभाग्य सुभगाकारा सर्वसौभाग्य वर्द्धिनी,
क्षेमङ्करी सिद्धिरूपा सत्कीर्तिः पथिदेवता ।१३३।

सर्वतीर्थमयी मूर्तिः सर्वदेवमयी प्रभा,
सर्वसिद्धिप्रदाशक्तिः सर्वमङ्गलमाङ्गला ।१३४।

सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

फल श्रुतिः

पुण्यं सहस्त्रनामेदम-अम्बाया रुद्र-भाशिषतम्,
चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम् ।१३५।

नातः परतरो मण्त्रो नातः परतरः स्तवः,
नातः परतरा- विद्या तीर्थ नातः परात्परम् ।१३६।

ते धन्याः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः,
एकभावं मुदा नित्यं येर्चयन्ति महेश्वरीम् ।१३७।

देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता,
भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्व-मङ्गला ।१३८।

एतामेव पुराराध्य विद्यां त्रिपुर भैरवीम्,
त्रैलोक्य मोहनं रूपमकार्षी भगवद्धरिः ।१३॥

इति रुद्रयामले तन्त्रे नन्दिकेश्वर संवादे,
महाप्रभावो भवानीनाम सहस्त्रस्तवराजः सम्पूर्णः॥

अथ इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्र मन्त्रस्य,
पुरन्दर ऋषि, अनुष्टुप् छन्दः,
श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता,

भुवनेश्वरी शक्तिः, माहेश्वरी कीलकम्
गायत्री, सावित्री सरस्वती कवचम्,
आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप
निवारणार्थे सर्व कामना सिद्धयर्थे
पाठे विनियोगः।

अथ करन्यासः

ॐ लक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ सहस्त्र नयनायै कनिष्ठिकाभ्यां नम।
ॐ इन्द्राक्षी भगवत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं षडंगन्यासः।

ॐ लक्ष्म्यै हृदयाय नमः, ॐ भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा,
ॐ माहेश्वर्यै शिखायै वषट्, ॐ वज्रहस्तायै कवचाय हुं।
ॐ सहस्त्र नयनायै नेत्राभ्यां वौषट्,
ॐ इन्द्राक्षीं भगवत्यै अस्त्राय फट्। ततः प्राणायामः।

अथ ध्यानम

ॐ इन्द्राक्षीं देवीं पीत वस्त्र धरां शुभाम्।
वामे-हस्ते वज्रधरां सव्य-हस्तेऽभय प्रदाम्॥
सहस्त्र नैत्रां सूर्याभां नानालंकार भूषिताम्।
प्रसन्न वदनां नित्याम् अप्सरो गण सेविताम्॥
श्री दुर्गा सौम्य वदनां पाशां कुशधरां पराम्,
त्रैलोक्य मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम॥

(गायत्री) ॐ शचीपतये विदमहे, पाकाशासानाय धी महि, तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्॥

मूल मन्त्रः ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षी श्री पें स्वाहा॥

इन्द्र उवाच

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता,
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा नाम्नीति विश्रुता।१।
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपा,
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मविदिनी।२।

नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णापिंगला,
अग्निज्वाला रौद्र मुखी कालरात्रिः तपस्विनी।३।
मेघश्यामा सहस्त्राक्षी विष्णु माया जलोदरी,
महोदरी मुक्तकेशी घोर रूपा महाबला।४।

आनन्दा भद्रजानन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया,
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।५ ।

इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र शक्ति परायणा,
महिषा सुर संहर्त्री चामुण्डा गर्भ देवता ।५ ।

वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी,
श्रुतिः स्मृति-धृर्ति-र्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।६ ।

अनन्ता विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ।८ ।

शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध शारीरिणी,
एतै-र्नामपदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।९ ।

आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्य सुख सम्पति कारकम्,
क्षया पस्मार कुष्ठादि ताप ज्वर निवारकम् ।१० ।

शतम् आवर्त्येऽयस्तु मुच्यते व्याधि बन्धनात्,
आवर्त्येत् सहस्त्रेण लभते वांछितं फलम् ।११।

राजा वश्यम् वाप्नोति सत्यम् एव न संशयः,
लक्ष्मे कंजपद्येस्तु साक्षात् देवी स पश्यति ।१२।

त्रिकालं पठते नित्यं धन धान्य प्रिवर्थनम्,
अर्धरात्रे पठेत् नित्यं मूच्यते कर्म बन्धनात् ।१३।

ऐन्द्र स्तोत्रम् इदं पुण्यं जपेतु फल वर्धनम्,
विनाशाय तु रोगाणामऽ पमृत्यु हरत्युत ।१४।

राज्यार्थो लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनम्,
इच्छाकामं तु कामार्थो धर्मार्थी धर्मम-व्ययम् ।१५।

विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम्,
इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ।१६।

इति श्री इन्द्राक्षी-स्तोत्रं सम्पूर्णम्

माया कुण्डलिनी, क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी,
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।

शक्ति शंकर वल्लभा त्रिनयना, त्रिनयना वाक वादिनी
भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारी त्वसि।

अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनो वांगमनः कायोपार्जित
पाप निवारणर्थ श्री इष्ट देवी प्रीत्यर्थ भगवती
आमा कामा चार्वंगी टंग-धारिणी तारा पार्वती
यक्षिणी श्री शारिका भगवती श्री शारदा भगवती
श्री महाराज्ञी भगवती श्री ज्वाला भगवती
व्रीडा भगवती वैखरी भगवती वितस्ता भगवती

गंगा भगवती यमुना भगवती कालिका भगवती
सिद्ध लक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुर सुन्दरी
सहस्त्रनाम्नी देवी भवानी सपरि-वारा सवाहना
सायुधा सांगा प्रीयतां प्रीतास्तु।

इति इन्द्राक्षी स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अथ शारिका स्तुतिः

बीजैः सप्तभिरूज्ज्वला कृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षि प्रणताङ्घ्रि पङ्कजयुगा या सप्तलोकाहृर्त

काश्मीर प्रवरेश्मध्य नगरेप्रध्यु म्नपीठे स्थिता
देवी सप्तक संयुता भगवती श्री शारिका पातुनः।

जय भगवति विन्ध्यवासिनि कैलासवासिनि
श्मशान वासिनि हुङ्कारिणि कालायनि
कात्यानि हिमगिरितनये कुमारमातः गोविन्द
भगिनि शितिकण्ठा भरणे अष्टादशभुजे
भुजङ्गवलय मण्डिते केयूरहारा भरणेअजेय
खड्गत्रिशूल डमरू मुद्गरचषककल शर चापवरा

अभय पाश पुस्तक कपाल खटवाङ्ग गदा
मुसुल तोमर चक्रहस्ते कृपापरे प्रभूतवविधयुधे
चण्डिके चण्डघण्टे किरात वेशे
ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणि
दिव्यतपोविद्यायिनि वेदमातः गायत्रि
सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि
विश्वेश्वरि विश्वकर्त्रि समाधिविश्रान्तिमये
चिन्मये चिन्तामणि स्वरूपे कैवल्ये शिवे
निराश्रये निरूपाधिमये निरामयपदे ब्रह्माविष्णु-
महेश्वरनमिते मोहिनि तोषिणि भयंकरनाशिनि
दितिसुतप्रमथिनि काले कालकिंकरमथिनि
कालाग्निशिखे कालरत्रि अजे नित्ये सिरंते

योगरते योगेश्वरनमिते भक्तजन वत्सले सुरप्रिय
कारिणि दुर्गे दुर्जय हिरण्ये शरण्ये कुरूमां दयाम्।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते।
मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्॥
कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि॥
हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।

विदितम अविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।

नन्दन्तु साधका: सर्वे विनशयन्तु विदुषका:
अवस्था शाम्भवीमेऽतु प्रसन्नोस्तु गुरु: सदा।

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भागभवेत।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम्
त्वया तत्क्षम्यतां देव ! कृपया परमेश्वर:।

राज-स्वस्ति प्रजा स्वस्ति देश स्वस्ति तथैव च,
यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्रह्मणेशु च।

सहनावक्तु, सह नौ भुनक्तु, सहवीर्यं कुर्वावहै:
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै:।

ओम् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते।
ओम् शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः ! ओम्

भजन

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।

है जीत तुम्हारे हाथों में,
और हार तुम्हारे हाथों में।

मेरा निश्चय बस एक यही,
एक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।

अर्पण कर दूं दुनिया भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में।

यदि जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ,
जैसे जल में कमल का फूल रहे।

मम अवगुण दोष समर्पित हों,
भगवान तुम्हारे हाथों में।

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले,
तव चरणों का मैं पुजारी बनूं।

इस भक्त की तन मन की,
रहे तार तुम्हारे हाथों में।

जब जब संसार का कैदी बनूं,
निष्काम भाव से काम करूं।

फिर अंत समय में प्राण जतूं,
निराकार तुम्हारे हाथों में।

मुझ में तुझ में बस भेद यही,
मैं नर हूँ आप नारायण हैं।

मैं हूँ संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।

प्रार्थना

ॐकार प्रभु तेरा नाम,
गुण गावे संसार तमाम।

प्राण स्वरूप प्राणों से प्यारा,
दूर दुखूं के करने हारा।

सुख स्वरूप सुखों के दाता,
अन्त न कोई तुम्हारा पाता।

सारे जग को पैदा करता,
सब से उत्तम पाप का हरता।

हे ईश्वर हम तुझे ध्यायें,
पाप कर्म के पास ना जायें।

बुद्धि करो हमारी उज्जवल,
जीवन होवे हमारा निर्मल।

ॐकार प्रभु तेरा नाम॥

आरती गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।१।

एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।२।

अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया,
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।३।

हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुवन का भोग लागे सन्त करें सेवा।४।

दीनन् की लाज राखो शम्भु सुत वारी।
कामन को पूरा करो जाऊं बलिहारी।५।

शिव जी की आरती

ओम् जय शिव ओंकारा, स्वामी जय शिव ओंकारा,
ब्रह्मा-विष्णु-सदाशिव अर्धाङ्गी धौरा। ॐ जय हर हर
महादेव !

एकानन् चतुरानन् पंचानन् राजे।
हंसासन गरुडासन वृषभवाह्न साजे॥

दोभुज चारभुज चतुर्भुज दशभुज ते सोहे।
तीनों रूप निरन्तर त्रिभुवन मन मोहे॥

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी कर माला धारी॥

श्वेताम्बर, पीताम्बर, बसमांबर, अंगे।
सनकादिक, ब्रह्मादिक, प्रेतादिक संगे॥

करमध्ये करमण्डल, चक्र त्रिशूल धर्त्ता।
दुःख हर्ता, सुख कर्त्ता जग पालन कर्त्ता॥

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों ही एका॥

त्रिगुण शिव जी की आरती जो कोई नित गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे॥

भजन जय सन्तोषी मां

मैं तो आरती उतारूं रे सन्तोषी माता की,
जय जय सन्तोषी माता जय जय मां।

बड़ी ममता है बड़ा प्यार मां की आंखों में,
बड़ी करुणा माया दुलार मां की आंखों में।

क्यूं न देखूं बारम्बार मां की आंखों में।
दिखे हर घड़ी नया चमत्कार मां की आंखों में।

नृत्य करूं छुम छुम झम झमा झम झुम झुम,
झांकी निहारूं रे ओ प्यारी-२ झांकी निहारूं रे।

मैं तो आरती उतारूं रे सन्तोषी माता की,
जय जय सन्तोषी माता जय जय मां।

सदा होती है जय जय कार मां के मन्दिर में,
नित झांझर की हो झन्कार मां के मन्दिर में।

सदा मंझीरे करते पुकार मां के मन्दिर में,
दिखे हर घड़ी नया चमत्कार मां के मन्दिर में।

दीप धरूं धूप धरूं प्रेम सहित भक्ति करूं,
जीवन सुधारूं रे ओ प्यारा-२ जीवन सुधारूं रे।
मैं तो आरती उतारूं रे सन्तोषी माता की॥

कुछ स्मृणीय श्लोक

ॐ नमः शिवाय गुरुवे सच्चिदानन्द मूर्तये,
निष्प्रपंचाय शान्ताय निरालाम्बाय तेजसे।

लीलया लोकरक्षार्थं द्विधा भूतो महेश्वरः,
यः स्वयं जगतां साक्षी तं वन्दे द्विरदाननम्।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तम्,
देवी सरस्वती व्यासं ततो जय मुदीरयेत्।

नमामि नारायण पादपंकजं,
वदामि नारायण नामनिर्भलम्।

स्मरामि नारायण तत्त्वमव्ययं,
करोमि नारायण पूजनं सदा।

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तं,
अश्वत्थपत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।

गोपाल बालं भुवनैकपालं संसारमाया मतिमोहजालं,
यशोविशालं शिशुपालकालं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।

कृष्णास्त्वदीय पदपंकज पंकजरान्ते,
अद्यैव मे विशतु मानस राजहंसः।
प्राणः प्रयाण समये कफवात पित्तै-
र्कण्ठावरोधन विद्यौ स्मरणं कुतस्ते।

(ध्यान करना)

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशयं मेघवर्णं शुभागम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं गोगिभिर्ध्यान-गम्यम्,
वन्दे विष्णं भवभय हरं सर्वलोकै-कनाथम्।

यं ब्रह्मावरुणेन्द्र मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः-
वैंदैः सांगपद क्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।

ध्यानावस्ति तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः।

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्मा द्विनिः सृतः।

श्री कृष्ण प्रीतत्यर्थे पाठे विनियोगः

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं
व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्ठा दशाध्यायिनी-
मम्बत्वामनु संदधामि। भगवद्‌गीते भवद्वेषिणीम् ।१।

नमोऽस्तुते व्यास विशालबुद्धे फुल्लारबिन्दाय तपत्रनेत्र
येन त्वया भारत तैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः ।२।

प्रपन्न पारिजाताय तोत्रवत्रै कपाणाये,
ज्ञानमुद्राय कृष्णाय गीतामृतदुहे नमः ।३।

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूर मर्दनम्,
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्‌गुरुम् ।४।

भीष्मद्रोणतटा जयद्रथजला गान्धारनीलोत्पला,
शल्यग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला।
अश्वत्थाम विकर्ण घोरमकरा दुर्योधना वर्तिनी,
सोत्तीर्णा खलुपाण्डवै रणनदीकैवर्तकः केशवः ।५ ।

पाराशर्यवचः सरोजममजं गीतार्थ गन्धोत्कटं,
नानाख्यानक केसरं हरिकथा सम्बोधनाबोधितम् ।६ ।
लोके सज्जनषट् पदैरहरहः पैपीयमानं मुदा,
भूयाद्भारत पङ्कजं कलिमल प्रध्वंसि नः श्रेयसे ।७ ।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्,
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ।८ ।

श्रीमद्भगवद्गीता व्याख्यान्

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं
य: शोकवह्नि जनकात्म जाया:,

आदाय तेनैव ददाह लंकां
नमामि तं प्रांजलि रांजनेयम्।

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

सह नाववक्तु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्य कुर्वावहैः।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहैः।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं

तत्र तत्र कृतमस्त कांजलिम्।

वाष्प वारि परि पुर्णलोचनं

मारुति नमत राक्षसान्तक्म्।१।

राम नाम जपतां कुतो भयं सर्वतापशम नैक भेषजम,

पश्यतात मम गात्रसन्निधौ पावकोऽपि सलिलायतेऽधुना।२।

करोतु सा नः शुभहेतुरी श्वरी,

शुभानि भद्राण्य-भिहन्तु चापदः।३।

यावन्नैव प्रविशति चरन्मारुतो मध्यमार्गे,

यानद्विन्दर्न भवति दृढं प्राणवात प्रबन्धात्।

यानन्नैव सहज सदृशं जायते तत्त्वम्

सावत्सर्वं तदिदमखिलं दम्भमिथ्याप्रलपम्।४।

क्कत्रं यदुधतम अभिष्ठुतये भवत्णा-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि ! शिरः करोति।
चेतश्च यत्नीय परायणमम्ब ! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः।५।

संसार सागर समुन्तरणैक मन्त्रं
ब्रह्मादि योगि मुनि पुजितसिद्धि मन्त्रम्।
दारिद्रय दुःख भय रोग विनाश मन्त्रं
वन्दे महाभयहरं गुरुराज मन्त्रमः।६।

आराधयामि गणिशन्निभमात्य लिङ्ग
मायापुरी हृदय पङ्कज सन्निविष्टम।
श्रद्धा नदी विमल चित्ते जलाभिषेक-
र्नित्यं समाधिकुसुमैर्न पुनर्भवाय।७।

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्यै

गुरुशक्तिः जयत्येका मत् रूप प्रविकासिका,
स्वरूप गोपन व्याग्रा शिव शक्तिः जिता यया।

माता भवानी च पिता भवानी
बन्धुर्भवानी च गुरुर्भवानी।
विद्या भवानी द्रविणं भवानी
यतो यतो यामि ततो भवानी।२।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि
दारिद्र्य दुःखभय हारिणि कात्वदन्या
सर्वोपकार करणाय दयार्द्र चित्ता।३।

भक्तानुग्रह कारिणी भगवती देवाधि देवीश्वरी
दीनानाथ कृपावती स्वजननी भक्तानु रक्ता सती
ॐ काराक्षर वासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा
भूयात नो वरदा सदाऽहाभयदा कामेश्वरी कामदा।४।

ॐ परमात्मने श्री शिवाय नमः

ईश्वरो गुरुरात्मेति मूर्तिभेद विभागिने,
व्योमवत् व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तयें नमः।
लीलया लोकरक्षार्थ द्विधाभूतो महेश्वरः,
यः स्वयं जगतां साक्षी तं वन्दे द्विरदाननम्।

ब्रह्मेन्द्र रुद्रहरिचन्द्र सहस्त्ररामि
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दितायै,
वागीश्वरि त्रिभुवनेश्वरि विश्वमात-
रन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते।

मूढाऽस्मि दुःख कलितोऽस्मि जरादि दोषै
र्भीतोऽस्मि शक्तिरहितोऽस्मि तवाश्रितोऽस्मि,
शम्भो ! तथा कलय शीघ्रमुपैमि येन
सर्वोत्तमां पदमुपोज्जित दुःख मार्गाः।

"मूढ छुस त दो'खवय स्त्यन बरिथ छुस
बुजरकि दूष सत्य खोफज़ाद छुस
सामर्थ रोस छुस निर्बल त कीवल
आसरस चा'निस थफ करिथ छुस।

ही शम्भु ! बनाव म्य जल त्युथ युथ प्रावय
सारिवय खोत् परम उत्तम थान
त्रा'विथ छुन ब दु:ख मारग सा'रिय
रोज़ हा ब चानि समाधियि लोर॥''

यस्मिन्सर्वं यतः सर्वं यः सर्वं सर्वतश्च यः।
यश्च सर्वमयो नित्यं तस्मै सर्वात्मने नमः॥

''शुभ समाप्तम्''

शान्ति पाठ

ॐ शं नो मित्रः। शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा।
शं नो इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुरूक्रमः।
नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामावेत्, तद्वक्तारमावेत्, आवेत् माम्,
आवेत् वक्तारम्।

(ऋग्वेद का मन्त्र)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्रीराजराजेश्वरी असत्वती

ॐ नमोभवान्यै

ॐ छन्द: पादयुगा निरुक्त सुमुखा शिक्षा च जंघा युगा
ऋग्वेदो रुयुगा युजु: सुजघना या सामवेदो दरा।
तर्कन्या यकुचा श्रुति स्मृति युक् काव्यादि वेदा नना
वेदान्ता मृतलोचना भगवती श्रीराज राजेश्वरी।१।
ईशाधी श्वरयो गिवृन्द विधृता स्वानन्द भूता परा
पश्यन्ती त्यनु मध्यमा विलसती श्रीवैखरी रूपिणी।
आत्मानात्म विचारिणी त्रिनयना विद्यावती भारती
श्रीचक्र प्रियबिन्दु तर्पणपरा श्रीराज राजेश्वरी।२।

कल्याणा युतपूर्ण बिम्बि वदना पुर्णेश्वरी नन्दिनी।
पूर्णा पूर्णतरा परेश महिषी पूर्णामृता स्वादिनी।
सम्पूर्णा परमोत्तमा मृतकला विद्यावती भारती श्रीचक्र० ।३।

एका कारमने कवर्ण विविधा कारै कचि द्रपिणी
चैतन्यात्मक एक चक्र रचिता चक्रांग एकाकिनी।
भावा भावविभाविनी भयहरा सद्भक्त चिन्तामणिः
श्रीचक्र० ।४।

लक्ष्या लक्ष्य निरीक्षणा निरुपमा रुद्राक्ष माला धरा
साक्षात्कारण दक्षवंश कलिता दीर्घाति दीर्घेश्वरी।
भद्रा भद्र वरप्रदा भगवती भद्रेश्वरी भद्रदा श्रीचक्र० ।५।

ह्रींबीजा नलनाद बिन्दु भरिता सत्कार (ओंकार) नादा
त्मिका ब्रह्मानन्द घनोदरी गुणवती ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा।

इच्छा ज्ञान क्रियावती जितवती गन्धर्व संसेविता

श्रीचक्र० ।६।

हर्षोन्मत्त सुवर्ण पात्रभरिता पाश्वोन्नता घूर्णिता हुंकार
प्रिय शब्दब्रह्म (राशि) निरता स्वार स्वतो ल्लासिनी।
सारा सार विचार चारुचरिता वर्णाश्रमा कारिणी

श्रीचक्र० ।७।

सर्वज्ञान कलावती सकरुणा सन्नादिनी नन्दिनी सर्वा-
न्तर्गत शालिनी शिवतनू सन्दी पिणी दीपिनी।
संयोग प्रिय रूपिणी प्रिय वती प्रीता प्रता पोन्नता

श्रीचक्र० ।८।

कर्माकर्म विवर्जिता कुलवती कर्मप्रदा कौलिनी कारु-
ण्यावधि सर्व कर्म निरता सिन्धु प्रिया शालिनी।

पूर्ण ब्रह्म सनातना न्तरगता ज्ञेया स्वयोगा त्मिका
श्रीचक्र॰।९।

हस्ति कुम्भ सदृक् पयो धर वरा पीनो न्नता नम्रगा
हाराद्या भरणा सुरेन्द्र विनुता श्रृङ्गा टपी ठालया।
योन्या कार कयोनिमु द्रित करा नित्यं सुवर्णात्मिका
श्रीचक्र॰।१०।

लक्ष्मी लक्षण पूर्ण कुम्भ वरदा लीला विनोद स्थिता
लाक्षा रञ्जित पद्म पाद युगला ब्रह्माण्ड संसेविता।
लोका लोकित लोककाम जयिनी लोका श्रयाङ्का श्रया
श्रीचक्र॰।११।

ह्रींका राङ्कित शङ्कर प्रियतनुः श्री योग पीठेश्वरी
माङ्गल्या युत पङ्कजा भनयना माङ्गल्य सिद्धि प्रदा।

तारुण्या त्तपसा र्चिता तरुणिका तन्त्रोप मातन्विता
श्रीचक्र० ।१२।

सर्वेशाङ्ग विहारिणी सकरुणा सर्वेश्वरी सर्वगा सत्या
सर्व मयी सहस्त्र दलगा सप्तार्ण वोप स्थिता।
सङ्गा सङ्ग विवर्जिता सुखकरी बालार्क कोटिप्रभा
श्रीचक्र० ।१३।

लक्ष्मी शादि विरिञ्चि चक्र मुकुटाद्यष्टाङ्ग पीठार्चिता
सूर्येन्द्वग्नि मयै कपी ठनिलया चिन्मात्र कौलेश्वरी।
गोप्त्री गुर्विणि गर्विता गगनगा गङ्गा गणेश प्रिया
श्रीचक्र० ।१४।

कादिक्षान्त सुवर्ण बिन्दु सुतनुः स्वर्णादि सिंहासना
नाना रत्नविचित्र चित्ररचिता चातुर्य चिन्ता मणिः।
चित्तानन्द विधायिनी सुविपुला कोटित्र यीश्यम्बिका
श्रीचक्र० ।१५।

ह्रींकार त्रयरूपिणी समयिनी संसारिणी हंसिनी
वामाचार परायणा सुमुकुटा बीजावती मुद्रिणी।
कामाक्षी करुणा विचित्र रचिता श्री श्री त्रिमूर्त्या त्मिका।
श्रीचक्र०।१६।

सा बिम्ब प्रतिबिम्ब लम्बित सलत् बिम्बाधरा याम्बि-
का जम्बीरोत्पल कर्णशोभत मुखा जम्बूफल श्रीकुचा।
नानारत्न किरीट दीप्ति लसिता प्रत्यक्ष दीक्षात्मिका।
श्रीचक्र प्रियबिन्दु तर्पणपरा श्रीराज राजेश्वरी।१७।

यत्तेजो निधि भिस्त्वनन्त घृणिभि र्नोपाह्यते प्रेरितु।
हार्दं ध्वान्त मपास्य सिक्षणपि तद्धयान मात्रा दृशा।
यत्सद्भाद नुभाति सर्व मुदितं भानुं यथा पद्मिनी।
प्रत्यग्दाम नमाम तत्तव वपुः श्रीराज राजेश्वरी।१८।

समाप्तम्

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिका वल्लभं, जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे॥

अच्युतं केशवं सत्य-भा-माधवं, माधवं, श्रीधरं राधिकाऽऽराधितम्।
इन्दिरा मन्दिरं चेतसा सुन्दरं, देवकी नन्दनं नन्दनं सन्दधे॥

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे, रुक्मिणी रागिणे जानकी जानये।
वल्लवी-वल्लभा-याऽर्चिता-यात्मने, कंस-विध्वंसिने-वंशिने-ते-नमः॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण, श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज, द्वारका नायक द्रौपदी रक्षक॥

राक्षस-क्षोभितः-सीतया-शोभितो, दण्डकारण्य-भू-पुण्यता-कारणः।
लक्ष्मणेनाऽन्वितो-वानरैः-सेवितो-गस्त्य-सम्पूजितो-राघवः-पातु-माम्॥

धेनुकारिष्टको-ऽनिष्टकृत्-द्वेषिणां, केशिहा-कसंहृत्-वंशिका-वादिकः।
पूतना कोपकः सूरजा खेलनो, बाल गोपालकः पातु मां सर्वदा॥

श्री रुद्राष्टकम्

नमामि-ईशं-ईशान-निर्वाण-रूपं, विभुं-व्यापकं-ब्रह्म-वेद-स्वरूपम्।
अजं निर्गुणं-निर्विकल्पं-निरीहं, चिदा-कारम्-आकाशवासं-भजेऽहम॥

निराकारं-ओंकार-मूलं-तुरीयं, गिरा-ज्ञान-गोतीतं-ईशं-गिरीशम्।
करालं-महाकाल-कालं-कृपालं, गुणा-गार-संसार-पारं-नतोऽहम्॥

तुषाराद्रि-सङ्काश-गोरं-गभीरं, मनो-भूत-कोटि-प्रभासी-शरीरम्।
स्फुरन्-मौलिकल्लोलिनी-चारु-गङ्गा, लसत्-भाल-बालेन्दु-कण्ठे-भुजङ्गा॥

चलत्-कुण्डलं-शुभ्रनेत्रं-विशालं-प्रसन्नाननं-नीलकण्ठं-दयालुम्।
मृगाधीश-चर्माम्बर-मुण्डमालं, प्रियं-शङ्करं-सर्वनाथं-भजामि॥

प्रचण्डं-प्रकृष्टं-प्रगल्भं-परेशं, अखण्डं-भजे-भानु-कोटि-प्रकाशम्।
त्रयी-शूल-निर्मूलनं-शूल-पाणिं, भजेऽहं-भवानीपतिं-भाव-गम्यम्॥

कलातीत-कल्याण-कल्पान्त-कारी, सदा-सज्जना-नन्ददाता-पुरारिः।

चिदानन्द-वन्दोह-मोहाप-हारी, प्रसीद-प्रसीद-प्रभो-मन्मथारिः ॥
न-यावत्-उमानाथ-पादार-विन्दं, भजन्तीह-लोके-परे-वा-नराणाम् ।
न-तावत्-सुखं-शान्ति-सन्ताप-नाशं, प्रसीद-प्रभो-सर्व-भूताधिवासं ॥
न जानामि-योगं-जयं-नैव-पूजां, नतोऽहं-सदा-सर्वदा-देव-तुभ्यम् ।
जरा-जन्म दुखौघता-तप्यमानं, प्रभो-पाहि-शापात्-नमामीश-शम्भो ।
रुद्राष्टकं-इदं प्रोक्तं, विप्रेण हर तुष्टये ।
ये पठन्ति नरा-भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

भजन

१. वन कस सन गोम, वन नस धुमना वार
तार दिन वालय, दिम सा तार
इन्द्रे गगरोव, कुरहम लूरपार ॥

२. दिल म्योन बुलबुल, मगर छुमसा बेकरार
लजिनय प्यठ त्रावान बार, पदिनय तल छुमं प्रारान शाहमार ॥

३. करवुन छुक पानय सोरय कारबार, मटि छुक स खारान बार,
वाति कोत अति सोनुय, हा गाटजार ॥

४. घर बार शुर बअच, बेयि सोरुय य परिवार
दास दारिज़ हुन्द छु यार
वुछ–वुछ त वुछ वुछ त्रावान संसार।

५. हन्य हन्य तन्मह, गोड़नय मय लोलनार,
मटि बोर करतम पार, अट गऩड़ डयोल गोम,
मटि कस छु म्योन बार।

६. मार मति चार कर, दोन वर कुनुय कर,
लजिमच़ छम अशिस धार, ज्यूठ छुम मंज़िल।
क्रूठ छुम संसार।

७. सत गुरु सुलि धरि, केंछाह मयति चार,
ब्रोंठ छुम छम्ब तय तप छम नार,

सत धाव, वत म्य हाव, पानय छुक निराकार,
तार दिन वाल्या दिम सा तार।

कृष्ण भजन

आओ मुरली मनोहर शाम, तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं
सुध लेलो मेरे भगवान, तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं
चरणों में तेरे डाले हैं डेरे, ओ मेरे भगवान तू आजा,
आये हैं द्वारे तुझ को पुकारें, आके तू द्रशर्ण दिखा जा।
हम भी हैं तेरी सन्तान, तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं।
माया में फंस कर ही नाथ, तुझ को भूला है यह जग सारा
तू ही रक्षक हैं तू ही पालन है, तेरा है सब को सहारा।
यह कहता दास नादान, तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं।
तुम हो गगण पर हम हैं ज़मीन पर, फिर भी है मन में समाया।

तुम ही पिता हो, मैं हूँ बालक जन्म-जन्म का है नाता
यह कहता है बालक नादान, तुझे तेरे भक्त बुलाते हैं।

जय गुरुदेव

गुरुदेव मेरे दाता हम को ऐसा वर दे
सेवा, सुमर्ण सतसंग झोली में बर दे,
नफरत जो करे हम से हम उन से प्यार करें
करते जो हमारा बुरा उन का सत्कार करें
नफ़रत को मिटा कर प्रभु प्रेम का रस भर दें
गुरु देव..............

मन मन्दिर में केवल सत्गुरु ही बस जाएँ
जिन को भी देखूँ मैं तेरा रूप नज़र आए
दे ज्ञान का अमरत रस जीवन को सफल कर दें

गुरु देव...............

शबरी की तरह सेवा, और प्यार हो मीरा का
श्रद्धा हो तुल्सी की और ज्ञान हो गीता का
यह अरज़ है मेरी सदा सत गुरु पूरण कर दें।

श्री राम

ऐसी कृपा करो राम मेरे, हर जन्म में रहूँ साथ तेरे,
चाहे जितने जन्म मुझ को देना, हर जन्म मौका सेवा का देना।
कस के पकड़ूँ चरण राम तेरे, हर जन्म में रहूँ साथ तेरे,
कब तलक तड़पते रहेंगे, लाख चौरासी बटकते रहेंगे।
अब तू ले शरण राम मेरे, हर जन्म में रहूँ साथ तेरे,
जग की ममता न मुझ को सताए और माया न मुझ को लुबाए।
मेरे हृदय करो राम डेरे, हर जन्म में रहूँ साथ तेरे,

बूल कर न नाता जग से जोड़ूँ, नाता पवन चरण से जोड़ूँ,
अब तो लेलो शरण राम मेरे, हर जन्म में रहूँ साथ तेरे।

श्री कृष्ण

बिन्द्राबन का कृष्ण कन्हया सब की आंखों का तारा।
मन ही मन क्यों जले राधिका मोहन तो है सब का प्यार।
बिन्द्राबन का............

जमना तट पर नन्द का लाला, जब जब रास रचाए रे।
सुध-बुध खोए खडी गोपियां जाने कैसा जादू डारा।
बिन्द्राबन का............

रंग खिलौना ऐसा जैसे छाई हो घट सावन की
ऐसे मैं तो हुई दीवानी, मन मोहन मन बावन की
तेरे कारण देख सांवरे छोड दिया है यह जग सारा।
बिन्द्राबन का............

स्वामी मस्तबब जी महाराज के सद्वचन

* साधु रमता भला।
* साधु त्याग करता है, स्वेच्छा से पर दूसरे पुरुष डंडे के ज़ोर से।
* परमार्थ सतकर्म, सद्भाव, सतगुण और सतविचार का दूसरा नाम है।
* परात्मा एक भाव है, और वह है प्रेम।
* जीवन एक महायज्ञ है और श्वास-उश्वास, सतकर्म और सद्भाव इसकी अहुतियां हैं।
* परोपकार बहुत बड़ी साधना है।   -तोड़ने से जोड़ना अच्छा है।
* भगवान के नाम पर अर्पण होना, यही धर्म और कर्तव्य भी है।
* भक्तजन रक्षा करते हैं, हानि नहीं पहुंचाते।
* गुरु शिष्य का नाता एक सूक्ष्म रिश्ता है इसमें भावुक्ता का कोई स्थान नहीं।
* अध्यात्मिक पथ पर चलने वाले को पैसों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, ईश्वर स्वयं आवश्यकताओं का प्रबन्ध करते हैं।
* सब जीव जन्तु परमात्मा के ही रूप हैं, जैसे : अंडं अंडं सकल ब्रह्मड़।
* निष्काम कर्म करने से मन और बुद्धि का मैल धुलता है।
* धर्म हमेशा से महिलाओं के कारण ही जीवित रहा है और आगे बढ़ा है।
* शिष्य ही गुरु को पंख लगाते हैं और वही गिराते भी हैं।
* मैं कोई जादूगर नहीं कि परमात्मा को हाथ पकड़ कर प्रत्यक्ष रूप में लोगों के सामने खड़ा कर दूं।